ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2015
मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव पर निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री नाफे सिंह राठी, पूर्व विधायक, बहादुरगढ़, श्री नवीन जी वाही, समाजसेवी, श्री श्रीनिवास गुप्ता, प्रधान शिक्षा सभा बहादुरगढ़, स्वामी धर्ममुनि जी, आश्रम, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आश्रम, श्री चर्तुभुज बंसल, बहादुरगढ़ तथा अन्य महानुभाव।

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव पर मुख्य यजमान दाएं से श्री सतीश जी खन्ना, श्रीमती सुनीता खन्ना (दिल्ली), श्री गणेश दास जी (दिल्ली), वानप्रस्थी मनुदेव (आश्रम)। मंच पर आसीन स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य खुशीराम जी एवं वानप्रस्थी पुरुषार्थ मुनि यज्ञ करते हुए।

(विवरण पृष्ठ 6 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

आयुष्मान विवान आर्य का जन्मदिवस मनाया

श्रीमती सुमन आर्या धर्मपत्नी श्री वेदप्रकाश आर्य जी ने अपने पौत्र आयुष्मान विवान आर्य सुपुत्र श्रीमती रितिका आर्या धर्मपत्नी श्री हिमांशु आर्य का जन्म दिवस अपने आवास ए-1, संजय इन्कलेव, उत्तम नगर, नई दिल्ली पर दिनांक 14.11.2015 को यज्ञ सत्संग पूर्वक उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया।

इस अवसर पर आचार्य राजहंस मैत्रेय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर यजमान परिवार एवं आयुष्मान विवान को सुदीर्घायुष्य की मंगलकामना करते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। शान्ति पाठ के बाद परिवार की ओर से भोजन की व्यवस्था की गयी।

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित बाएं से मंच संचालक श्री राजवीर जी आर्य, स्वामी रामानन्द जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, श्री नफेसिंह जी राठी, श्री श्रीनिवास गुप्ता, स्वामी धर्ममुनि जी।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

911

श्रीमती आशा छाबड़ा
सेक्टर-10 ए, गुड़गांव

प्रिय बन्धुओं! मास दिसम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जनवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

मार्गशीर्ष-पौष सम्वत् 2072 दिसम्बर 2015

सृष्टि सं. 1972949116 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-14) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-12

(वर्ष 45 अंक 12)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
आश्रम समाचार	6
वेद सन्देश	7
सम्पादकीय : ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक	8
प्रभु को मित्र बना कर देखो	9
क्यों माने ईश्वर को?	12
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	15
विवाह के संकल्प व प्रतिज्ञा	22
राजेन्द्र बाबू की टोपी संन्यासी के चरणों में	23
असली सुख	23
मधुमेह (डायबिटीज)	24
आर्यसमाजी बनो	26
कर्मफल सिद्धान्त से जुड़े कुछ प्रश्न व समाधान	27
हंसो और हंसाओ	29
मूर्तिपूजा और आर्यसमाज एक चिन्तन	30
बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

जन्मदिवस मनाया गया

वानप्रस्थी पुरुषार्थ मुनि वैदिक वृध्याश्रम बहादुरगढ़ का 85वां जन्मदिवस यज्ञ सत्संग के साथ दिनांक 17.11.2015 को मनाया गया।

इस अवसर पर पुरुषार्थमुनि जी सपत्नीक यजमान बने। स्वामी धर्ममुनि जी ने सामूहिक रूप से उन्हें आशीर्वाद दिलाया। स्वामी रामानन्द जी, आचार्य राजहंस जी मैत्रेय एवं स्वामी धर्ममुनि जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनको स्वास्थ्य एवं सुदीर्घायुष्य की मंगल कामना की। शान्तिपाठ के पश्चात प्रसाद वितरण हुआ तथा आश्रम वासियों को प्रातराः की व्यवस्था की गयी।

श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार बहादुरगढ़ ने अपने पौत्र आयुष्मान श्वाश्वत का जन्मदिवस दिनांक 1.12.2015 को आत्मशुद्धि आश्रम की पवित्र यज्ञशाला में यज्ञ सत्संग के साथ मनाया। इस अवसर पर स्वामी जी के सानिन्ध्य में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने यज्ञ सम्पन्न कराया। यजमान श्री अभिमन्यु सपत्नीक बने। अन्य पारिवारिक सदस्य ने मिलकर आहुतियां प्रदान की तथा स्वामी जी ने यजमान को सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। इसके बाद श्री रामदेव जी, श्री पुरुषार्थ मुनि जी एवं आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने भजन एवं बालक उत्थान पर उद्‌बोधन देते हुए बालक को आशीर्वाद दिया। श्री राजवीर जी आर्य ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर परिवार सम्बन्धी एवम् अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। शान्ति पाठ के बाद परिवार की ओर से विक्रम देव जी शास्त्री ने स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की।

फर्रुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग दिनांक शनिवार 14 नवम्बर 2015 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। सायं 4 बजे आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। विभिन्न यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। तत् पश्चात् आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने सुमधुर भजन गाते हुए आध्यात्मिक, सामाजिक विषयों पर प्रभावशाली अपने सुन्दर विचार रखे और सभी विचारों का उपसंहार करते हुए निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से आर्य श्रद्धालु उपस्थित रहे। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने भजन प्रस्तुत करते हुए सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

खेद है

आत्मशुद्धि मासिका पत्रिका नवम्बर अंक के स्वास्थ्य खण्ड में पृष्ठ 25 पर उबले हुए आलू की जगह उबले हुए अंडे मानवीय त्रुटि से छप गया। जो कि अखाद्य के अन्तर्गत है, जिसका हमें खेद हैं। – **सम्पादक**

चितरंजन और निर्धन बालक

बाल्यावस्था में देशबंधु चितरंजन दास को अपने घर से स्कूल खर्च के लिए, जलपान के लिए जो खर्च मिलता था, उसे वे अपने मित्रों में समान रूप से बांट देते थे। इस तरह अनजाने में ही अनेक असहाय और गरीब विद्यार्थियों को सहायता मिल जाती थी। एक बार ग्यारह साल की अवस्था में उन्होंने अपने पिता से कुछ रुपये मांगे। वे अपने छोटे से बालक की मांग पर आश्चर्यचकित रह गये और परख करने के लिए तीन रुपये दे दिये तथा उनके पीछे गुप्तचर लगा दिये। चितरंजन ने तीसरे दिन एक गरीब लड़के के लिए दो रुपये की पुस्तकें खरीदी और एक रुपये का जूता ले दिया। गरीब विद्यार्थी का मुख कृतज्ञता से प्रसन्न हो उठा, उसने चितरंजन को हार्दिक धन्यवाद दिया। पिता ने गुप्तचर से सारी बात सुनकर बालक चितरंजन को हृदय से लगा लिया।

शिक्षा-असहाय और गरीब की सदैव सहायता करो।

दिवंगत

श्री देवेन्द्र छाबड़ा

निष्ठावान आर्य श्री देवेन्द्र कुमार छाबड़ा का निधन 22 अक्टूबर 2015 को 64 वर्ष की आयु में साधारण बीमारी के पश्चात हो गया। पूरे 13 दिन तक घर में वैदिक कथा का आयोजन किया गया। वैदिक कथा का प्रतिदिन श्रीमती पुष्पा कंवल जी ने सफल वाचन किया। तत्पश्चात तेहरवीं वाले दिन आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम फरूर्खनगर के उपप्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य जी ने शान्ति यज्ञ कराया। परिवार ने भी आर्य जी की प्रेरणा से यज्ञोपवीत धारण करने, गायत्री की साधना एवं यज्ञ कार्य करने का संकल्प किया। श्री छाबड़ा जी पंजाब एण्ड सिंन्ध बैंक से कुछ समय पूर्व सेवानिवृत हुए थे वह अपने पीछे अपनी माता श्री के अतिरिक्त अपनी धर्मपत्नी श्रीमती आशा छाबड़ा सुपुत्री कुमार दीप्ति छाबड़ा सुपुत्री श्रीमती मनीषा (अमित) आनन्द छोड़ कर गये हैं। आत्मशुद्धि आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से करता है।

– कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान

गजल

-कवि कृष्ण 'सौमित्र' साहित्यालंकार

झूठी उम्मीदों से खुद को छलते रहे
उम्र ढलती रही दिन गुजरते रहे
ना उम्मीदी बनी जो भी उम्मीद की
महल उम्मीदों के फिर भी बनते रहे
खुद को हमने मिटा डाला जिनके लिए
साँप बनकर वो ही हमको डसते रहे।
रिश्तेदारी की दुश्मन बनी मुफलिसि
रिश्ते बनते रहे और बिगड़ते रहे
हार मानी नहीं जिन्दगी से कभी
खुद से लड़ते रहे और निखरते रहे।

चौ. सूरत सिंह

चौ. सूरजसिंह नूनामाजरा बहादुरगढ़, जिला-झज्जर दिनांक 16.11.2015 को अस्वस्थता के कारण अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर चले गये। आप भारतीय सेना से सेवानिवृत थे। सामाजिक उत्थान के कार्यों में अपना योगदान देते रहे। आप अपने पीछे दो पुत्र, 6 पौत्र, 3 प्रपौत्रों से भरा पूरा खुशहाल परिवार छोड़कर गये हैं।

दिनांक 23.11.2015 को स्वामी धर्ममुनि जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के सानिध्य में कन्या गुरु कुल लोवांकला की छात्राओं ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया, जिसमें परिवार से जुड़े हुये एवं अन्य गण मान्य व्यक्ति उपस्थित रहें। आत्मशुद्धि आश्रम उस दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा परिवारी जनों के लिए दुःख सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य की मंगल कामना करता है।

गर्भपात का परिणाम

गर्भपात का बुरा परिणाम हो रहा है,
प्रकृति के विरूद्ध यह काम हो रहा है।
समाज व डाक्टरी पेशा बदनाम हो रहा है,
नारी शरीर रोगों का गुलाम हो रहा है।

यह गर्भपात गर्भ के रोग को बढ़ाता है,
प्रकृति के विरूद्ध यह काम हो रहा है।
समाज व डाक्टरी पेशा बदनाम हो रहा है,
नारी शरीर रोगों का गुलाम हो रहा है।

इनका हल केवल इस गर्भपात को रोको,
गर्भपात के लिए बढ़ते इस हाथ को रोको।
दानव समाज के आजाद इस हाथ को रोको,
गर्भपात पाप है मिलकर इस पाप को रोको।

जीवन उत्थान के लिये क्रान्तिकारी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

स्वामी धर्ममुनि जी का 80वां जन्मोत्सव श्रद्धा पूर्वक मनाया गया

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फरूखनगर गुड़गांव के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी का 80वां जन्मोत्सव बृहद्यज्ञ, नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं भजन संध्या कार्यक्रम के साथ स्वामी चन्द्रवेश जी गाजियाबाद की अध्यक्षता में उत्साह एवं धूमधाम से मनाया गया। प्रात: स्वामी जी के सानिध्य में यज्ञ चला। तत्पश्चात् कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीनिवास जी गप्ता प्रधान शिक्षा सभा बहादुरगढ़ द्वारा की गयी। मुख्य अतिथि श्री नवीन जी वाही समाज सेवी बहादुरगढ़ रहे। विशिष्ट अतिथि डा. राजेन्द्र शर्मा चेयरमेन ब्रह्मशक्ति संजीवनी हास्पीटल बहादुरगढ रहे। ब्रह्मशक्ति संजीवनी हास्पिटल बहादुरगढ के सौजन्य से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का उद्घाटन चौधरी नफेसिह राठी पूर्व विधायक बहादुरगढ़ के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया। इस मौके पर प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य, पंजाबी बाग, श्रीमती सुशीला आर्या धर्मपत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची, झारखण्ड, श्री सत्यपाल जी वत्स, श्री यशपाल जी गांधी, वा. ईशमुनि जी श्री धर्मवीर जी आर्य श्री कर्तारसिहं जी आर्य आदि महानुभाव उपस्थित रहे। मंच संचालन श्री राजवीर जी आर्य द्वारा कुशलता पूर्वक किया गया। शिविर 9बजे से 1बजे तक चला जिसमें कुशल चिकित्सकों की टीम ने 400 रोगियों के स्वास्थ्य की जांच की। सभी को फ्री दवाईयां दी गयी और भोजन की व्यवस्था भी की गयी।

मध्याह्नोपरान्त 3 बजे पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी के सानिध्य में यज्ञ सम्पन्न कराया गया। वेदपाठ रवि शास्त्री व ब्र. जयपाल द्वारा किया गया। श्रीमती सुनीता खन्ना धर्मपत्नी श्री सतीश जी खन्ना दिल्ली ने यजमान आसन को सुशोभित किया। स्वामीजी ने यजमानों को सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। श्रद्धालुओं ने स्वामी जी को जन्म दिवस की बंधाईयां देते हुए पुष्पमालाओं और अपनी-2 भेंट प्रदान कर जोरदार स्वागत किया।

भजन संध्या कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी चन्द्रवेश जी ने की। पं रमेश चन्द्र जी, पं जयभगवान जी संगीताचार्य भगवानदास, श्रीमती दयावती तथा गुरूकुल लोवां कला की छात्राओं ने सुरीले भजनों द्वारा समा बांध दिया। इस अवसर पर आचार्य खुशीराम जी, महात्मा लालदास जी स्वामी रामानन्द जी, आदि विद्वानों और संन्यासियों ने स्वामी धर्ममुनि जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सुदीर्घायु की कामना की और उनके द्वारा किये जा रहे लोक कल्याण के कार्यों की सराहनीय प्रशंसा की। इसके तत्पश्चात् सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री तेजवीर आर्य के सुमधुर भजनों का कार्यक्रम चला जिसने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया और सभी ने उनके गायन की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर पं जयभगवान जी आर्य श्री चन्द्रभानू जी चौधरी विकासपुरी श्री शिवकुमार जी मदान, श्री विजय तनेजा अपने समाज के सभी सदस्यों के साथ आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपरी दिल्ली, श्री वीरेन्द्र जी दौलताबाद ,कर्नल राजेन्द्र सहरावत ,राजेश जी राठी, श्री रमेश राठी, श्री राजपाल जी तथा अन्य क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्तियों ने पधार कर स्वामीजी को बधाईयां दी और आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपनी शुभ कामनएं दीं। स्वामी धर्ममुनि जी सभी संन्यासियों, विद्वानो, दानियों तथा विभिन्न स्थानों से आये हुए श्रद्धालुओं का हार्दिक धन्यवाद किया तथा समारोह की सफलता पर सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजवीर जी आर्य द्वारा किया गया। शान्ति पाठ के बाद स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री रवि शास्त्री ब्र. कर्ण और अन्य छात्रों द्वारा की गयी जिसमें सभी ने भरपूर प्रसाद ग्रहण किया।

चार पुरुषार्थ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

चतुरश्चिद् ददमानाद्, बिभीयादा निधातोः।
न दुरुक्ताय स्पृहयेत्।। ऋग् 1.41.6

ऋषिः **कण्वःघौरः**। देवता **वरूणमित्रार्यमणः**। छन्दः **गायत्री**।

- (**चतुरः चित्**) चारों ही (**पुरुषार्थों**) को (**ददमानात्**) धारण करनेवाले से (**बिभीयात्**) डरे, (**आ निधातोः**) जब तक वह इन्हें छोड़ न दे। (**दुरुक्ताय**) दुर्वचन की (**न स्पृहयेत्**) स्पृहा न करे।

प्रायः देखा यह जाता है कि मनुष्य भयसंत्रस्त असत्पुरुषों से होता है कि वे कहीं हमें हानि न पहुँचा दें। अन्धकार में चोर से वह थर-थर काँपता है। आततायी को देख घर में जा दुबकता है। पर इस प्रकार के असाधु पुरुषों से तो उसे संघर्ष करना चाहिए, न कि उनसे डरना और संघर्ष करके विजयी होना चाहिए। तो फिर मनुष्य किससे डरे? उससे जो कि धार्मिक है, जो धर्मपूर्वक धन कमाता है, जो धर्मानुकूल काम में प्रवृत्त होता है और जो जीवनमुक्त है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ मानव की उन्नति के चार सोपान हैं, जिनका मूल धर्म है। किसी ने धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह धी, विद्या, सत्य, अक्रोध को धर्म कहा है। किसी ने जो धारण करे उसे धर्म कहा है, किसी ने जो स्वयं के लिए प्रिय हो वैसा ही व्यवहार दूसरों के प्रति करने को धर्म कहा है। धर्म के लक्षण अनेक हो सकते हैं, पर सबमें मूल भावना एक ही है कि वे ही कार्य धर्म कहाते हैं, जिनसे अन्यों का भी कल्याण हो और अपना भी। धर्म के समान धन भी उन्नति का साधन है, पर तभी तक, जब तक वह धर्मानुकूल उपायों से अर्जित किया गया हो। अन्यथा वह पतनोन्मुख करनेवाला बन जाता है। 'काम' भी धर्म-विरूद्ध होने पर पतन का साधन बनता है, किन्तु धर्मानुकूल होने पर संकल्प बल द्वारा बड़े-बड़े कार्यो का साधक होता है। जैसे निर्वात स्थान में दीपक की लौ निश्चल रहती है, वैसे ही जिसके इन्द्रियाँ, मन आदि निश्चल हो गये हैं और जिसने समाधि से अपने आत्मा को परमात्मा में केन्द्रित कर लिया है, वह जीवन्मुक्त कहता है। शरीरान्त होने पर वह मोक्ष पा लेता है। इन धर्म-अर्थ-काम-मोक्षरूप चारों पुरुषार्थो को धारण करनेवाले व्यक्ति से मनुष्य डरे कि ऐसे उच्च मनुष्यों के सम्मुख अशोभन कार्य करूँ तो मेरे लिए डूब मरने की बात है। पर इनसे भय का कारण तभी तक है, जब तक ये लोग चारों पुरुषार्थो का सेवन करते है। यदि ये पुरुषार्थो को त्याग देते हैं तो ये उस कोटि के व्यक्ति नहीं रहते कि कोई पाप करते हुए इनसे डरे। चारों पुरुषार्थों के धारक किसी महात्मा से मनुष्य किस रूप में डरे इसका एक उदाहरण देता हुआ मन्त्र कहता है कि वह दुर्वचन बोलने की कभी स्पृहा न करे, अपितु इनके सान्निध्य से प्रेरणा पाकर सदा सुवचन ही बोले।

हे मित्रता के आदर्श मित्र प्रभु! हे पापनिवारण के आदर्श वरूण प्रभु! हे न्याय के आदर्श अर्यमा प्रभु! तुम हमारे अन्दर ऐसी वृत्ति उत्पन्न करो कि हम चारों पुरुषार्थो के धारक व्यक्तियों से शिक्षा लेकर सदा उनसे अनुमोदित सदाचार में ही प्रवृत्त रहें।

आश्रम द्वारा प्रकाशित
महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

सम्पादकीय

ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक

मानव जीवन में ज्ञान और कर्म का बड़ा ही महत्त्व है और मनुष्य मात्र में ये दोनों गुण जन्म से ही देखने को मिलते हैं। इन दोनों के बिना मनुष्य का जीवन जड़ पदार्थ के समान प्रतीत होगा। इन दोनों गुणों के कारण ही उसमें जीवंतता आती है। इनके कारण ही वह प्राणी मात्र में सर्वोच्च गरिमा महिमा बनाये हुए है। इन दोनों गुणों के न्यून और अधिक उपयोग से ही मानव जीवन बंधन-मुक्ति के भंवर में फंसा होता है। आज इन दोनों के असुन्तलन से ही मनुष्य मात्र दुखी है।

वेदो में मानव जीवन के उत्थान की सद् प्रेरणाएं भरी पड़ी है, जिन्हें केवल चिन्तन मनन या समझने की आवश्यकता है। यदि ठीक बात हृदय में उतार ली या समझ ली जाती है तो वह व्यक्ति को बदलना प्रारम्भ कर देती है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय में ज्ञान और कर्म का सुन्दर उपदेश है जो जीवन में उतारने योग्य है-

अन्धन्तमः प्र विशन्ति ये अविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउविद्यायां रताः॥12॥

इस मंत्र में विद्या को ज्ञान कहा है और अविद्या को कर्म कहा है। यानि जो कर्म की उपासना करते हैं वे गहरे अंधकार में जाते हैं। उनसे अधिक गहरे अंधकार को वे जातें हैं जो ज्ञान की उपासना करते हैं। आगे मंत्र में कहा है कि- ज्ञान का फल अलग है और कर्म का फल अलग है। जो हमने ज्ञानियों से सुना है॥ 13 ॥ इससे आगे मंत्र में कहा है- जो ज्ञान और कर्म दोनों को साथ-साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को पार कर ज्ञान के द्वारा अमृत को प्राप्त होता है॥ 14 ॥

मानव का उत्थान उसके ज्ञान और कर्म पर निर्भर करता है जो दो प्रकार से किया जा सकता है। एक प्रकार- जिसके करने पर मानव को गहरे बन्धन में बांध लेता है। दूसरा वह जिसके करने से वह सभी बन्धनो से मुक्त हो जाता है। एक कर्म जो ज्ञान या विवेक पूर्वक किया जाता है जो लौकिक कामना की पूर्ति हेतु नही अपितु स्व स्वरूप स्थिति के लिए किया जाता है वह कर्म द्वारा मृत्यु को पार करता हुआ अर्थात् मृत्यु से बचने के साधनों को अपनाता हुआ ज्ञानपूर्वक अमृत को प्राप्त हो जाता है। दूसरे वे कर्म जो पूर्व संस्कारों के वशीभूत होकर लौकिक कामना की पूर्ति के लिए अविवेक पूर्वक किए जाते हैं वे ही कर्मवासना के बन्धन में बांध लेते हैं। जिनसे मनुष्य मात्र प्रभावित है। जो इन्हीं बंधनो से छूटना चाहता है। इसलिए वेद का उपदेश मनन करने योग्य है कि जो व्यक्ति केवल कर्म में रत है वे अंधकार को प्राप्त होते हैं। और जो व्यक्ति केवल शाब्दिक ज्ञान चर्चा में लगें रहते हैं, वे उससे भी अधिक गहरे अंधकार को प्राप्त होते हैं। इसलिए ज्ञानी और कर्मठ अपने आप में पूर्ण नहीं है। दोनों को एक दूसरे के सहयोग की आवश्यकता है। तभी श्रेय को प्राप्त किया जा सकता है। प्रायः ज्ञान और कर्म को अलग अलग समझ लिया जाता है जो उचित नहीं। बिना ज्ञान के कर्म अंधा और दुःख का कारण होता है, बिना कर्म के ज्ञान लंगडा और भारभूत होता है। अतः ज्ञान और कर्म को एक दूसरे का पूरक मानकर ही लौकिक और पारलौकिक उन्नति की जा सकती है।

-राजहंस मैत्रय

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

प्रभु को मित्र बना कर देखो

- कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

कोई व्यक्ति किसी पार्षद, विधायक, सांसद, मन्त्री, प्रधानमन्त्री का प्रिय हो जाये तो संसार के लोग भी उसके सामने नम्र हो जाते हैं, दुनिया उससे कठोरता से बात नहीं करती, सम्मान से बात करती है। प्रत्येक व्यक्ति की भावना आ जाती है परन्तु यदि हम बादशाओं के बादशाह परमपिता परमात्मा से मित्रता कर लें तो सारा संसार हमारे प्रति नतमस्तक हो जायेगा और हमारा सम्मान भी करने लगेगा। इसे एक दृष्टान्त से स्पष्ट करते हैं-

कोई व्यक्ति एक राजा के पास गया और जाकर उसने कहा कि मैं कुछ मांगना नहीं चाहता और आप मुझे देना भी कुछ नहीं। परन्तु मेरे ऊपर एक कृपा करना-यह दुनिया जो है न, जो मेरा अपमान करती है, इनकी दृष्टि ठीक कर दो। राजा ने कहा-तो कल मिलना बाजार के अन्दर।

राजा हाथी पर बैठा हुआ आ रहा था। राजा की सवारी निकल रही थी। राजा ने उस व्यक्ति को अपनी ओर आने के संकेत किया। वह व्यक्ति राजा के पास गया। राजा ने उसे अपने साथ हाथी पर बिठा लिया। पूरे बाजार में घूमे। उस व्यक्ति के सभी मित्र, सम्बन्धी और विरोधियों ने भी देखा कि यह व्यक्ति राजा के साथ हाथी पर बैठा हुआ है। यात्रा समाप्त हुई। राजा ने कहा-उतर जा अब। बात हो गई इतना ही पर्याप्त है। न मैंने तुझे कुछ दिया और न ही तुझ से कुछ लिया। परन्तु आज के बाद संसार को देखना।

अब वही व्यक्ति जैसे ही नीचे उतरा, लोग कहने लगे-कमाल है, राजा तुम्हें इतना मानता है और तू इतना सीधा बन कर रहा। राजा ने तुझे देखा, एकदम बुलाकर अपने पास बिठाया। अब तो सब की आंखे बदल रही थी। मित्र तो प्रसन्नता में झूम ही रहे थे, शत्रु भी उसका सम्मान करने लग गये थे। यह व्यक्ति विस्मित था। राजा के पास कुछ देर बैठने का ऐसा परिणाम भी हो सकता है, मैंने सोचा न था अब प्रत्येक व्यक्ति प्यार देने लग गया है। लोगों ने अत्यधिक प्यार देने प्रारम्भ कर दिया तो आंख में आंसू भरकर कहता है-राजा तेरे निकट दो घड़ी बैठे, हमारा कितना मान बढ़ गया है। यदि हम राजाओं के राजा परमपिता परमात्मा के निकट बैठ जायें अर्थात् उसके मित्र बन जायें तो हमारी स्थिति कैसे हो जायेगी। बस इतना ही सोचना था कि अब इस संसार के राजा के पास नहीं। अपितु राजाओं के राजा परमपिता परमात्मा से ही मित्रता करेंगे।

कन्हैया लाल आर्य

तभी तो कहा है कि भगवान के मित्र बनो भगवान को सखा बना लो, उसके प्यारे हो जाओ और उससे कहा-मेरी बुद्धि के रथ को, मेरे जीवन के रथ को सम्भालो मेरे भगवान, जहां ले जाना है, ले जाओ। मैंने तो तुम्हें अपने जीवन का रथ अर्पित कर दिया और जब इस जीवन रूपी रथ का चलाने वाला ही भगवान होगा, फिर चाहे सारा संसार विरोधी क्यों न हो जाये, दुनिया को झुकना पड़ेगा। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने प्रभु के सत्य मार्ग को अपना लिया था। सारा संसार विरोधी हो गया परन्तु मेरा प्यारा दयानन्द घबराया नहीं सत्य मार्ग से डिगा नहीं। अन्ततः पूरी दुनिया को दयानन्द की सच्चाई ज्ञात हुई तो पूरा संसार एक स्वर से कह उठा-दयानन्द तुम्हारा मार्ग ठीक है, अन्ततः जमाने को झुकना पड़ा। यह तब हो पाया जब दयानन्द जी ने परमपिता परमात्मा को अपना सखा बना लिया।

भगवान् कहते हैं मुझ तक पहुंचना है, मुझे मित्र बनाना है तो राग को तुम्हें छोड़ना होगा। यदि तुम राग के बन्धन में पड़े रहोगे तो संसार में उलझते ही रहोगे। पुनः पुनः जन्म लेना होगा। आवागमन के चक्र से कभी भी नहीं बच पाओगे। राग जब तक छोड़ेंगे नहीं, संसार छूटेगा नहीं। फिर संसार में चोला धारण कर आना पड़ेगा बहुत-बहुत मोह रखा दुकान से कर्म तो अच्छे थे नहीं, पुनः शरीर धारण कर लिया, मनुष्य का नहीं, चूहे बन कर आ गये, अपनी दुकान की बोरियों को ही कुतर रहे है बैठे-बैठे। पुत्र आयेगा, अपनी हानि देखेगा, तब वह चूहेदानी को लाकर उस चूहे को पकड़कर पार्क या दूर किसी स्थान पर छोड़ आयेगा।

पुनः इधर-उधर घूमता हुआ उसी दुकान में मोह के कारण आ जायेगा।

राग जब तक छोड़ेगें नहीं और परमात्मा का धाम मिलेगा नहीं। उसकी चरण में आने का तात्पर्य है भय से रहित हो जाना। अथर्ववेद के 19वें काण्ड के सूक्त संख्या 15 के यन्त्र में हमें अभय होने की बात कही गई है।

अभयं मित्रादभयभमित्राद भयं ज्ञातादभयं नो परेक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

(मित्रात् आर्य) मित्र से हमें अभय हो (अमित्रात् अभयम्) शत्रु से अभय प्राप्त हो (ज्ञातात्) परिचित से (अभयम्) अभय हो और (परोक्षात्) जो परोक्ष में है, उससे भी (नः) हमें (अभयम्) अभय हो (नक्तम् अभयम्) रात्रि में अभय हो (नः) हमें (दिवा अभयम्) दिन में अभय हो (सर्वाआशाः) सब दिशायें (मम) मेरी (मित्रं भवन्तु) मित्र हों।

पहले प्रभु से प्रार्थना की कि मुझे मित्र से अभयकर। पश्चात् कहा-मुझे शत्रु से अभय कर। आश्चर्य की बात तो यह है कि पहले यह नहीं कहा कि मुझे शत्रु से बचा, अपितु यह कहा कि मेरी मित्र से रक्षा कर। ऐसा इसलिए कि जब मित्र शत्रु बन कर खड़ा हो जाता है तो वह शत्रु से भी अधिक भयानक हो जाता है और अधिक चोट लगती है। शत्रु बन कर खड़ा हो जाता है तो वह शत्रु से भी अधिक भयानक हो जाता है और अधिक चोट लगती है। शत्रु की चोट सहन हो जाती है परन्तु मित्र द्वारा किया गय प्रहार असहनीय होता है। इसे एक दृष्टान्त से समझते हैं।

दो मित्र थे। एक बार दोनों में किसी विषय पर विचार भिन्नता हो गई। किसी कारण वश पहला मित्र किसी मुकदमें में फंसल गया। दूसरे मित्र ने उससे कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। राजा ने पहले मित्र को दण्डित करने का आदेश दिया कि इस व्यक्ति को एक-एक पत्थर मारें। जो भी इस व्यक्ति को पत्थर नहीं मारेगा उसे भी दण्डित किया जायेगा। जो अपरिचित थे, वे पत्थर मार रहे थे, उस के शत्रु भी उस पर पत्थर मार रहे थे। राजा ने देखा कि वह इन पत्थरों से प्रहार से भी मुस्करा रहा है। परन्तु उसकी दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी जो पत्थर नहीं मार रहा था। राजा ने उसे आदेश दिया तुम इस व्यक्ति पर पत्थर क्यों नहीं फैंक रहे हो। दण्ड के भय से या विचार-भिन्नता के भय से उसने एक फूल लिया और अपने मित्र पर फैंक दिया। फूल लगते ही मित्र रोने लगा। जब राजा ने यह दृश्य देखा तो वह हैरान हो गया। राजा ने उस पिटते व्यक्ति से पूछा-अभी तो तुम मुस्करा रहे थे और अब रोने लगे हो? पिटते हुए व्यक्ति ने कहा-राजन्! मुझ पर अपरिचितों ने पत्थर फैंके, वे नहीं जानते कि मैं निर्दोष हूं। उनका पत्थर फेंकना बुरा नहीं लगा। मेरे शत्रुओं ने मुझ पर पत्थर फेंक, मैं विचलित नहीं हुआ। परन्तु मेरे मित्र ने मुझ पर पत्थर तो नही तो फूल तो फेंका ही। मुझे इस का दुःख है तभी तो वेद का ऋषि घोषणा करता है-हे भगवन्। पहले मेरी मित्र से रक्षा कर। परन्तु यह सब तो भौतिक मित्र है। यह कब शत्रु बन जायें, कोई नहीं जानता। तभी तो कहा है-ऐ मानव! तू प्रभु की शरण में जा उसे मित्र बना। वह तुम्हारा कभी अहित नहीं करेगा। क्योंकि वह दयालु है, कृपानिधान है, न्यायकारी है और सर्वज्ञ भी है। यदि तू निर्दोष होगा तुझे दण्डित नहीं करेगा।

परमात्मा की शरण अपने आप में अभयता प्रदान करती है। ईश्वर के निकट होने का तात्पर्य है भय से रहित हो जाना। इसीलिए महापुरुष किसी से भयभीत नहीं हुए। जब महर्षि दयानन्द सरस्वती से एक अंग्रेज अफसर ने पूछा-महाराज यहां धर्म प्रचार करने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई तो नहीं है। महर्षि ने उत्तर दिया-कोई कठिनाई नहीं है। तभी अंग्रेज अफसर ने प्रार्थना की-महाराज! आप अब प्रभु से प्रार्थना करते हैं तो यह भी प्रार्थना कीजिए कि हमारा राज्य सदैव बना रहे। इतना कहना था कि अंग्रेज अफसर को

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

ललकारते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा-प्रार्थना तो मैं प्रतिदिन करता हूं कि परन्तु प्रभु से यह कहता हूं कि प्रभु वह दिन कब आयेगा जब अंग्रेज मेरी भारतभूति से अपना बोरिया बिस्तर समेट कर चले जायें। यह सुनकर अंग्रेज अफसर हैरान हो गया। उसने लन्दन यह रिपोर्ट भेजी कि इस साधु पर पूरी तरह दृष्टि रखी जाये। यह हमारे राज्य के लिए बहुत बड़ा खतरा है। महर्षि जी ने इतना और कह दिया-विदेशी राज्य पिता के तुल्य स्नेह करने वाला क्यों न हो, वह स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता 'इतना साहस एक अभय मानव ही कर सकता है। मेरा प्यारा ऋषि दयानन्द प्रभु का मित्र बन चुका था, तभी वह साहस कर पाया इसलिए वक्ता बनने के लिए भी प्रभु को मित्र बनाना होगा।

हमारा तो कोई एक व्यक्ति भी विरोधी हो जाये, हमें भय लगने लगता है। परन्तु मेरे प्यारे ऋषि दयानन्द के अनेकों शत्रु बन चुके थे। कोई सांप फेंकता था। कोई विष देता था। कोई गालियां देता था परन्तु सत्य कहने से मेरा ऋषि चूका नहीं। उसने स्पष्ट कहा था-यदि मेरी उंगलियों को बत्ती बना कर भी जला दोगे तो भी मैं सत्य से विमुख नहीं हूंगा। तभी तो आर्य समाज के दस नियमों में प्रथम पांच नियमों में सत्य की बात कही गई है। ऋषि इतना साहस तभी तो कर पाया जब प्रभु को अपना मित्र बना लिया।

प्रभु को मित्र बनाने के लिए हमे अपने आप तक सीमित न रहें, अपना विस्तार करें, अपने विस्तार को केवल अपने परिवार तक भी सीमित न रखें, इस विस्तार को मुहल्ले, नगर, राष्ट्र ही नहीं अपितु पूरे विश्व तक ले जाओ। किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, परिवार का नहीं विश्व को अपना परिवार मानकर के निकल पड़ो। परमात्मा की सृष्टि के प्रति उसकी सेवा में जुट जाओ, फिर भय नहीं रहेगा। जब भय नहीं रहेगा, तो प्रभु हमारा मित्र बन जायेगा। हमारा मार्गदर्शक बन जायेगा। प्रभु हम पर कृपा करें कि हम उसके सच्चे मित्र बन कर अपने जीवन के प्रमुख लक्ष्य प्रभु व मोक्ष को प्राप्त कर सकें।

- 4/44, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा,मो.-09911197073

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	32.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	40.00	रु. प्रति किलो
विशेष	50.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	70.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	125.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

क्यों माने ईश्वर को?

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

ईश्वर को क्यों माने? यह प्रश्न किसी भी मननशील मनुष्य के मस्तिष्क में आ सकता है। वह अपनी बुद्धि के अनुसार विचार करेगा और हो सकता है कि उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त न हो। यदि वह अपने परिवार व मित्रों से इसकी चर्चा करेगा तो सबके उत्तर अलग-अलग होंगे। सभी मतों व सम्प्रदायों के विचार व उत्तर, परस्पर वैचारिक समानता न होने के कारण, अलग-अलग होंगे, यह निश्चित है। अब जिज्ञासु मनुष्य को उन सभी विचारों व मान्यताओं पर विचार कर निर्णय करना होगा। हमें लगता है कि उसे जो भी उत्तर प्राप्त होंगे या तो वह गलत होंगे या अधूरे होंगे जिससे जिज्ञासु प्रवृत्ति के विवेकशील मनुष्य का समाधान नहीं हो सकेगा। उसके पास एक ही मार्ग शेष रहता है कि वह किसी वेद या आर्य विद्वान की शरण ले और उससे इस प्रश्न की चर्चा करे, तो अनुमान है कि उसका पूरा समाधान अवश्य ही होगा। इसका कारण यह है कि वेद व आर्य विद्वानों के पास ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद का प्रकाश है। इन वैदिक आर्य विद्वानों में ईश्वर की विशेष कृपा भी होती है जो कि सम्भवतः अन्य मतों के विद्वानों व अनुयायियों में नहीं देखी जाती जबकि उनके दावे बड़े-बड़े होते हैं। विभिन्न मतों के आचार्यों व उनके अनुयायियों के ईश्वर सम्बन्धी किए जाने वाले दावों में उनकी अज्ञानता छिपी हुई दिखाई देती है। सत्य व असत्य का जैसा विश्लेषण व समीक्षा वेद व आर्य विद्वान करते हैं, वैसी समीक्षा व विश्लेषण अन्य किसी मत में नहीं किया जाता है। यही कारण है कि वेदभद्र आर्यों को ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होने के साथ उन्हें ईश्वर के मानने से लाभ व न मानने से होने वाली हानियों का भी पूरा-पूरा ज्ञान होता है।

हम एक पौराणिक मान्यता व विश्वास वाले परिवार में जन्में और अपनी आयु के 18 से 20 वर्षो तक हम अपने सभी धार्मिक कार्य यथा पूजा-उपासना आदि पौराणिक रीति के अनुसार ही करते थे। एक युवा सज्जन विद्वान मित्र की प्रेरणा से हमें आर्यसमाज का परिचय मिला जो हमें रविवार के अवकाश के दिन खाली समय में वहां घुमाने ले जाने लगे। हमने वहां विद्वानों के प्रवचनों को सुना और समाज-मन्दिर में उपलब्ध सत्यार्थ प्रकाश आदि वैदिक साहित्य को लेकर पढ़ा। आर्यसमाज के विद्वानों के तर्क पूर्ण प्रवचनों और सत्यार्थप्रकाश की बुद्धि व तर्क पूर्ण मान्यताओं को पढ़कर उन विचारों व मान्यताओं का हमारे मन व मस्तिष्क पर धीरे-धीरे प्रभाव होने लगा। अब विचार करने पर हमें अपनी जन्मना पौराणिक मान्यताओं की सत्यता के सन्तोषप्रद समाधान नहीं मिले और आर्यसमाज की वेदमूलक मान्यताओं की सत्यता की साक्षी व पुष्टि हमारा मन-मस्तिष्क व हृदय करने लगा। फिर जो होना था वही हुआ। हमने आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म लेकर भर दिया और आर्यसमाज के साप्ताहिक यज्ञ व सत्संगों में वहां जाने लगे। हर बार वहां से किसी नये धार्मिक विषय की पुस्तक ले आते जिसे पढ़कर उस विषय का ज्ञान हो जाता था। वेद व आर्यसमाज की मान्यताओं को हम अपने पौराणिक तर्कों से काटना चाहते थे, परन्तु हमारे पास तर्क होते ही नहीं थे। अतः वैदिक विचारों ने हमारे पौराणिक विचारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली जिसका परिणाम है कि हम विगत 40 से 45 वर्षों से मन व आत्मा से आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े हुए हैं।

ईश्वर को मानना व न मानना हमारी निजी सोच पर निर्भर होता है। संसार में बहुत से लोग हैं जो ईश्वर को नहीं मानते। उन्हें साम्यवादी कह सकते हैं। यह बात अलग है कि बंगाल व अन्यत्र रहने वाले हमारे

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

भारत के साम्यवादी व उनके कुटुम्बी दुर्गापूजा आदि जैसे नाना प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान भी करते हैं। जो लोग ईश्वर को बिल्कुल नहीं मानते और जो विद्रूप ईश्वर पूजा को मानते व करते हैं, उसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि वह न तो स्वयं आत्मचिन्तन करते हैं और न ही ईश्वर व जीवात्मा विषयक सर्वाधिक प्रमाणिक वैदिक साहित्य को पढ़ते हैं। यदि यह लोग उपनिषद ही पढ़ ले तो ईश्वर के स्वरूप से परिचित हो सकते हैं। उपनिषदें यद्यपि संस्कृत भाषा में है परन्तु इनके हिन्दी सहित अनेक भाषाओं में भाष्य व अनुवाद उपलब्ध हैं। ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप और संसार की रचना की पहेली के यथार्थ रहस्य को जानने के लिए ''सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में ईश्वर की सत्ता को तर्क व युक्ति से समझाया गया है।

सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने प्रश्न प्रस्तुत किया है कि आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से। फिर वह प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते। इसके उत्तर में वह न्यायदर्शन का सूत्र ''**इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।** प्रस्तुत करते हैं और बताते हैं कि श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ जो सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उस का आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। और जब आत्मा, मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से (होता) है। और जब जीवात्मा शुद्ध होकर परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उस को उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का (शुद्ध हृदय से विचार व ध्यान करने पर) प्रत्यक्ष होता है अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है। हमने इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द के विचारों की कुछ झलक प्रस्तुत की है। विस्तार से जानने के लिए जिज्ञासुओं को सत्यार्थ प्रकाश का गहन अध्ययन करना चाहिये। हमारा अनुमान है कि बार-बार सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से अध्येता को ईश्वर के बारे में निर्भ्रान्त ज्ञान अवश्य हो जाता है।

ईश्वर है और उसी ने इस सृष्टि को बनाया है तथा वही इसका संचालन कर रहा है। उसी से, जन्म के बाद मृत्यु की भांति, संसार की प्रलय होती है व आगे चलकर इस सृष्टि की भी होगी। उसी परमात्मा से सभी प्राणी अस्तित्व में आते हैं और अपने कर्मानुसार सुख-दुःख रूपी फलों का भोग करते हैं। इस सन्दर्भ में हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि संसार के किसी वैज्ञानिक, मत-पन्थ के आचार्य व अन्य के पास सृष्टि और सभी प्राणियों के जन्मदाता का बुद्धिसंगत निभ्रान्त ज्ञान व उत्तर उपलब्ध नहीं है। यह केवल वेद और वैदिक साहित्य में ही उपलब्ध होता है। अभी तक

सूचना

प्रसन्नता और हर्ष का विषय है कि आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा योग साधको की उन्नति के लिए लिखित महर्षि पतञ्जलि प्रणीत, ''योगदर्शन'' पर राजभाष्य एक सरल सुबोध वैज्ञानिक दृष्टि में पुस्तक छप चुकी है। जो योग साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ही नहीं अपितु आत्मिक उन्नति में मील का पत्थर साबित होगी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्रः
पतंञ्जलि वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

ईश्वर व जीवात्मा विषयक वेद, दर्शन, उपनिषद व सत्यार्थ प्रकाश आदि किसी ग्रन्थ की मान्यताओं व सिद्धान्तों का किसी वैज्ञानिक व नास्तिक विद्वान ने युक्ति व तर्कपूर्वक खण्डन नहीं किया है। अत: ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व विषयक अन्य कोई सन्तोषजनक पक्ष न होने के कारण सभी मनुष्यों को वेदसम्मत ईश्वर को मानने में ही कल्याण है। ईश्वर है, यदि उसे मानेंगे तो ईश्वर को मानने से मिलने वाले लाभों से समृद्ध होंगे और यदि नहीं मानेंगे तो उन लाभों से वंचित हो जायेंगे। कुछ क्षण के लिए यदि इस मिथ्या मान्यता को भी स्वीकार कर लें कि ईश्वर नहीं है, तो भी ईश्वर को मानने से हमें कोई हानि नहीं होगी। क्योंकि जब वह है हि नहीं तो हानि होने का प्रश्न ही नहीं है। परन्तु यदि ईश्वर है और हम उसे नहीं मानेंगे तो हानि होना निश्चित है। अत: दोनों ही स्थितियों में ईश्वर को मानने में ही मनुष्य को लाभ है।

ईश्वर को मानने से क्या लाभ हैं? पहला लाभ तो यह है कि ईश्वर को जानने व मानने तथा उसकी स्तुति प्रार्थना व उपासना करने से जीवात्मा के बुरे गुण-कर्म-स्वभाव छूट कर ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप, शुद्ध व पवित्र, हो जाते हैं। आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि जिससे दु:खों की निवृत्ति होने के साथ सभी प्रकार के भय दूर होते हैं। मृत्यु का भय भी समाप्त हो जाता है। अभ्युदय व नि:श्रेयस की प्राप्ति होती है। मनुष्य को स्वस्थ जीवन का लाभ होने के साथ सुख व समृद्धि सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की उपलब्धि होती है। इसके विपरीत ईश्वर को न मानने पर मनुष्य इन अधिकांश लाभों से वंचित हो जाता है। उसे केवल अपने सत्यासत्य कर्मों के फल ही ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं। ईश्वर से जो सत्प्रेरणायें जीवात्माओं को प्राप्त होती है उसका अनुभव अधार्मिक नास्तिक लोग नहीं कर पाते। असली सहिष्णुता ईश्वर को मानने वाले धार्मिक लोगों में ही पायी जाती है। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानने व मानने वाले लोग सहिष्णुता का दिखावा करते हैं, वह सहिष्णुता के मूल स्वभाव व चरित्र से कोशों दूर होते हैं। जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अविनाशी व अमर है। इसका पुनर्जन्म सुनिश्चित व अवश्यम्भावी है जो जीवात्मा के कर्मानुसार ईश्वर द्वारा दिया जाता है। यदि ईश्वर को नहीं मानेंगे तो हमारा आगामी जीवन बिगड़ेगा अर्थात् निम्न व नीच योनियों में जन्म लेकर दीर्घ अवधि तक दु:खों को भोगना ही होगा। ईश्वर को मान कर और उसकी वैदिक विधि से स्तुति-प्रार्थना उपासना कर नास्तिकों व अर्धनास्तिक मत-पन्थ के अनुयायियों को होने वाली हानियों से बचा जा सकता है। हम आशा करते हैं कि यह लेख पाठकों को उपयोगी होगा।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो09412985121

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! --व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

हम उत्तरकाण्ड को वाल्मिकी रामायण का भाग नहीं मानते हैं। सर्वप्रथम तो इसके नाम से ही ज्ञात होता है कि बाद में मिलाया हुआ विषय। देखिए राम ने धर्मपूर्वक राज्य किया और उसके राज्य में चारों वर्णो के स्त्री पुरुष कोई अपराध नहीं करते थे। सभी धर्मपरायण थे। ऋषि वाल्मिकी का आशय भी यहीं था कि राम के इतिहास को जो कि एक आदर्शकाल था उससे हम प्रेरणा लें और अपने दिव्य महापुरुष श्री रामचन्द्र जी के बारे में जाने और उनके आदर्शो से शिक्षा ग्रहण करें। अब हम उत्तरकाण्ड को क्यों नहीं स्वीकार करते हैं, इसके विषय में जानकारी दे रहे हैं। इस काण्ड में लिखा मिलता है कि एक बार राम के मन में आया कि मैं अपनी प्रजा के भावों को जानूँ कि वे मेरे तथा मेरे राज्य के प्रति मेरे पीछे से क्या धारणा रखते हैं। यही विचार मन में लिए राम एक रात्रि को भेष बदलकर निकल पड़े। जब वे धोबियों की बस्ती से गुजर रहे थे तो एक धोबी अपनी पत्नि को पीट रहा था और पीटते-पीटते कह रहा था कि मैं राम जैसा थोड़े ही हूँ, जिसने रावण के पास एक साल तक रही पत्नि को रख लिया। धोबी का धोबन को पीटने का कारण यह था कि एक रात्रि धोबी को बिना बताए कहीं और रही। इस घटना ने राम को झंझोर कर रख दिया और वे वहीं से घर लौट आए। धोबी की बात मन से निकल नहीं रही थी। अंत में बड़े दुःखी मन से प्रजा में विश्वास बनाए रखने के उद्देश्य से अपनी धर्मपत्नी सीता को घर से निकाल दिया। जिस समय सीता को घर से निकाला गया उस समय सीता गर्भवती थी। वहाँ से सीता को ऋषि वाल्मिकी के आश्रम में छोड़ा गया जहाँ पर उसने एक शिशु को जन्म दिया। जिसका नामकरण लव किया गया। एक बार सीता जब नदी से पानी लेने गई हुई थी तब लव कहीं पास की झाड़ियों में खो गया। ऋषि वाल्मिकी ने उसे बहुत तलाश किया पर ना मिलने पर वे अधीर हो उठे, क्योंकि वे जानते थे कि लव के अन्दर सीता का हृदय बसता है। वह उसके बिना अपने प्राण त्याग देगी। सीता को पानी लाती हुई देखकर तो ऋषि के मानों प्राण ही निकल गए। उन्होंने अपने हाथों से थोड़ी सी दाभ-घास को उखाड़ा और अपने तप के बल से उससे लव बना दिया। थोड़ी देर बाद लव भी मिल गया तो उस दूसरे बच्चे का नाम कुश रख दिया। दो बच्चों को पाकर सीता अत्यन्त प्रसन्न हुई। उनकी सारी दीक्षा का भार स्वयं ऋषि ने संभाला हुआ

था। कोई-कोई यह भी कहते हैं कि दाभ-घास से जो बच्चा बनाया था, यह बात सत्य नहीं है बल्कि सीता ने आश्रम में जुड़वां बच्चों को जन्म दिया था जिनका नाम लव और कुश रखा गया था। दूसरी और अपनी पत्नी को अपने से अलग करके राम अत्यन्त दुःखी रहने लगे। समय उसी तरह से गुजर रहा था कि राम ने ऋषि मुनियों की योजना अनुसार अश्वमेध यज्ञ करने का विचार किया। राम द्वारा चारों दिशाओं में लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न द्वारा अश्वमेध यज्ञ को सफल बनाने के लिए नियमानुसार चारों दिशाओं को फतह करने के उद्देश्य से जब अश्वों को छोड़ा गया तो वाल्मिकी ऋषि के आश्रम के पास से गुजर रहे अश्वों को लव और कुश ने रोक लिया। उन अश्वों का नेतृत्व स्वयं लक्ष्मण कर रहा था। आपस में घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध के लिए स्वयं राम को आना पड़ा। राम को देखकर सीता ने विलाप करते हुए अपने दोनों वीर किशोरों को युद्ध ना करने के लिए कहा। जबकि वे किशोर युद्ध करने का हठ कर रहे थे। राम अपने पुत्रों की वीरता देखतर अति प्रसन्न हुए और सीता को वापिस चलने का आग्रह किया क्योंकि अश्वमेध यज्ञ में सम्राट के वामांग में महारानी का वेदी पर आसीन होना अनिवार्य होता है। सीता इस प्रसन्नता को सहन नहीं कर पाई और उसका नारी हृदय फट पड़ा और तत्काल ही देहावसान हो गया। सीता की जगह उसकी सोने की प्रतिमा बना कर वामांग में स्थापित की गई और इस तरह से अश्वमेध सम्पन्न किया गया और उसकी पूर्ण हूति की गई। चारों भाईयों के दो-दो पुत्र थे, राम से लव-कुश जिनको अयोध्या व श्राबस्ती का

राज्य तथा लक्ष्मण के दो पुत्र अंगद और चन्द्रकेतु इनको गरो व काशी का राज्य, भरत के दो पुत्र तक्ष व पुष्कर, इनका गांधार व पुष्करावती तथा शत्रुघ्न के दो पुत्र सुबाहु एवं शत्रुघाती इनको मथुरा व विदिशा का राज्य दे दिया गया। इन आंठों पुत्रों को राज्य सौंप कर चारों भाई कषाय वस्त्र धारण करके हिमालय चले गये, जहाँ प्रभु भक्ति करते हुए इन नश्वर शरीर का परित्याग करके परमपद को प्राप्त हुए।

टिप्पणी: रामायण और रामचरितमानस में राम के राज्य विषय में काफी विस्तार से वर्णन आता है। इसी क्रम में लिखा मिलता है कि ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शुद्र चारों वर्णों में से कोई भी अधर्मी नहीं था। प्रथम तो धोबी वाली कहानी कपोल कल्पित व निराधार है लेकिन कुछ व्यक्ति यह दलील देते हैं कि क्योंकि राम मर्यादावादी थे इसीलिए मर्यादा का पालन करने के लिए उन्होंने ना चाहते हुए भी सीता को वन में भेजना पड़ा। इस तरह की दलीलों के विषय में हमारा कहना है कि ये भाई मर्यादा का अर्थ ही नहीं जानते हैं। वास्तव में मर्यादा का तात्पर्य अपने कर्त्तव्य को वैदिक मर्यादा के अनुसार पालन करना अर्थात् वेदानुकूल जीवन निर्वाह तथा अपने अनुकूल स्थापित श्रेष्ठ वैदिक परम्पराओं का पालन करना ही मर्यादा है और इन्हीं मर्यादाओं का राम ने अपने जीवन में पालन किया जिससे उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि से ऋषिमुनियों ने नवाजा। अब आप ही विचारिये कि एक धोबी के कहने मात्र से यदि राम ने अपनी सती, साध्वी, पतिव्रता और गर्भवती स्त्री को अपने से पृथक कर दिया तो हमारा मानना है कि राम ईश्वर के अवतार तो बहुत असंभव सी बात है, वे साधारण मनुष्य की श्रेणी में भी नहीं ठहरते हैं। इन बातों का मूल कारण तो पुराण आदि साहित्य हैं। दूसरा वे मत-मतान्तर हैं जो स्त्री को नरक का द्वार व पैरों की जूती समझते हैं। अपनी बात की सत्यता सिद्ध करने के लिए ही उन्होंने सीता और द्रोपदी जैसी स्त्रियों का चरित्र हनन किया है, ताकि स्त्रियों को वेदों में वर्णित समानता के अधिकार से वंचित किया जा सके। धन्य हैं देव दयानन्द जिन्होंने "यत्र नारयस्ति पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" वाला मूल मन्त्र विश्व को दिया। कुछ विद्वान भाई यह कहते हैं कि धोबी के कहने से तो नहीं लेकिन उत्तम संस्कार वाली सन्तान के निर्माणार्थ सीता को वाल्मिकी आश्रम में भेजा था। हम इस बात से भी सहमत नहीं होते हैं क्योंकि वेदों की विद्वान सीता और वेद विदूषी कौशल्या और स्वयं राम के होते हुए गर्भवती स्त्री को ऋषि के आश्रम में भेजने का कोई औचित्य नहीं लगता। विद्या अध्ययन के लिए उप-नयन संस्कार के पश्चात बालकों को ऋषि आश्रम में भेजा जाना उचित और तर्क संगत है। बालकों की देखभाल के लिए समय-समय पर राम और सीता वहां जाते हों, यह तो संभव है। दूसरा बालक लव के खो जाने पर दाभ-घास उखाड़कर बालक लव जैसा ही बना देने वाली बात ऐसे ही लगती है जैसे महाराजा शिव ने अपने पुत्र गणेश को आज्ञा ना मानने पर तलवार से शीश काट दिया था और फिर पार्वती के भय से हाथी का सिर काटकर गणेश के धड़ पर लगा दिया था। इन स्वप्न समान कपोल कल्पना को सत्य मानने वालों के पास क्या इन प्रश्नों के उत्तर हैं-

क-ऐसे अद्‌भुत ऋषि वाल्मिकी जो दाभ-घास से लव जैसे बालक को बना सकते थे क्या उनको यह ज्ञात नहीं हुआ कि लव तो जिन्दा है और वहां झाडियों में खो गया है, उसे मैं ले आता हूँ?

ख-ठीक इसी तरह माता की आज्ञा में स्थित गणेश का क्रोध में धड़ से शीश उतार देने पर और फिर पार्वती के भय से हाथी के बच्चे का सिर काटकर गणेश के धड़ पर लगाने की बजाए गणेश का वहीं पर कटे पड़े हुए शीश को उठाकर गणेश के धड़ पर लगा देना क्या सरल नहीं था?

ऐसा करने से जहाँ गणेश को सुख प्राप्त होता वहीं एक हाथी के बच्चे की हिंसा के अपराध से भी बचा जा सकता था। यह सब इतिहास प्रदूषण की बातें हैं और इनको गपोडे समझकर हम विस्तार से यहां लिखने की आवश्यकता नहीं समझते हैं।

3. अश्वमेध यज्ञ के विषय में यही तर्क दिया जाता है कि ऋषियों ने सीता को वापिस लाने की योजना बनाई कि एक अश्वमेध यज्ञ किया जाए। उस अश्वमेध यज्ञ में राम के वामांग में महारानी का होना अनिवार्य होगा और यही एक बहाना है जिससे सीता वापिस अयोध्या आ सके।

इस प्रसंग में भी कोई सार नहीं लगता है। यद्यपि राम समय-समय पर बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करते रहते हैं, ऐसा प्रमाण वाल्मिकी रामायण में मिलता है लेकिन अश्वमेध यज्ञ की आवश्यकता तो तब पड़ती जब सम्राट को यह लगे कि कुछ माण्डलिक राजा अपने आपको स्वतन्त्र घोषित करने लगे हैं, उनको अंकुश में लाने के लिए ऐसा यज्ञ किया जाता था।

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

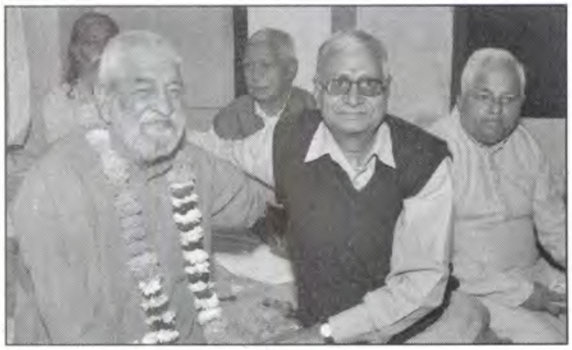

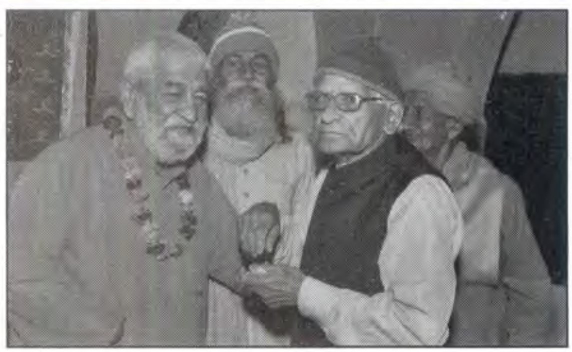

अगर वे माण्डलिक राजा ऐसा अंकुश मानने के लिए तैयार नहीं होते थे तो उन्हें युद्ध द्वारा अपनी व्यवस्था में लाया जाता था। राम के समय इस तरह की अव्यवस्था का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। राम सभी के हृदय में बसते थे, व्यर्थ में किसी को हानि पहुंचाने का कोई मनोरथ नहीं पढ़ने में आता है। कई जगह भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के दो-दो पुत्रों का वर्णन भी पढ़ाने में आता है। हमारा मानना है कि इस तरह का वर्णन रामायण का भाग नहीं हो सकता है। राम के शासन काल के पश्चात किसने राज्य किया, कैसा राज्य किया, यह एक अलग काल के इतिहास का हिस्सा है, इसका राम के काल से कोई सम्बन्ध नहीं है। आगे रामायण सम्बन्धी और बहुत सी शंकाओं का समाधान पाठकों के लिए किया जा रहा है।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो. बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड

विवाह के संकल्प व प्रतिज्ञा

- वान. जयदेव हसीजा, गुड़गांव

हमारे ऋषि मुनियों द्वारा स्थापित शादी विवाह के लिए आध्यात्म के अन्तरगत 'वर' (होने वाले पति) तथा 'वधू' (होने वाली पत्नी) विवाह संस्कार में संस्कार विधि अनुसार पंडित यह पतिज्ञा करवाते हैं।

'वर' (होने वाले पति) की प्रतिज्ञाएं निम्नलिखित होती हैं।

1. आज से धर्मपत्नी को अर्द्धांगिनी घोषित करते हुए, उसके साथ अपने व्यक्ति को मिला कर नये जीवन की सृष्टि करता हूं, अपने शरीर के अंगों की तरह उसका ध्यान रखूंगा।
2. प्रसन्नता पूर्वक उसे गृहलक्ष्मी का महान अधिकार सौंपता हूं, और जीवन संचालन में उसके परामर्श को महत्व दूंगां।
3. रूप, स्वास्थ्य, स्वभाव जन्य गुण-दोष एवं अज्ञान जनित विकारों को चित्त में नहीं रखूंगा,उसके कारण असंतोष व्यक्त नहीं करूंगा। स्नेहपूर्वक सुधार या सहन करते हुए आत्मीयता बनाए रखूंगा।
4. पत्नी का मित्र बन कर रहूंगा और पूरा-पूरा स्नेह देता रहूंगा। इसका पालन पूरी निष्ठा और सत्य के आधार पर करूंगा।
5. पत्नी के लिए जिस प्रकार पतिव्रत धर्म की मर्यादा कही गयी है, उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नीव्रत धर्म का पालन करूंगा, चिन्तन और आचरण दोनों से ही पर नारी से वासनात्मक सम्बन्ध नहीं जोडूंगी।
6. गृह-व्यवस्था में धर्म पत्नी को प्रधानता दूंगा। आमदनी और खर्च का क्रम उसकी सहमति से करने की गृहस्थोचित जीवनचर्या अपनाऊंगा।
7. धर्मपत्नी की सुखशान्ति तथा प्रगति-सुरक्षा हेतु अपनी शक्ति और साधन आदिपूरी ईमानदारी से लगातार रहूंगा।
8. अपनी ओर से मधुर भाषण तथा श्रेष्ठ व्यवहार बनाये रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा। मतभेदों तथा भूलों का सुधार शान्ति के साथ करूंगा। किसी सामने पत्नी को लांक्षित (तिस्कृत) नहीं करूंगा।
9. पत्नी के असमर्थ या अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाने पर भी अपने सहयोग और कर्त्तव्य-पालन में रतीभर भी कमी न रखूंगा।

यह तो थे आध्यामिक वचन (प्रतिज्ञाएं) जो पति ने पत्नी पाने के लिए पूरे समाज एवं विस्तृत सम्बन्धित परिवार की उपस्थिति में 7 फेरे लेकर वेदी पर बैठे हुए इष्ठ देव के सामने किए।

अब मैं प्रस्तुत करता हूं कि आज के सामाजिक परिवेश में एक आदर्श पति ''कैसा होना चाहिए।''

1. उसे अपनी सारी मुहब्बत तथा प्रेम केवल अपनी पत्नीके लिए सुरक्षित (रीजर्व) कर लेना चाहिए।
2. उसे यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि पत्नी मेरे काबू में आये एक खूबसूरत गुड़िया है जिसे मैं अपनी लस्ट लस्ट मिटाने का खिलौना समझूं।
3. उसे समय-समय पर उसके गुणों कर प्रशंसा करनी चाहिए जैसे ऐसा उचित अवसर मिले।
4. उसे पत्नीके स्वास्थ्य की पूरी-पूरी केयर (परवाह) करनी चाहिए।
5. उसे दूसरों की उपस्थिति में कभी भी पत्नी की निन्दा आलोचना नहीं करनी चाहिए।
6. उसे गृहिणी को कर्त्तव्य पालन हेतु घरेलू खर्चो के लिए उचित धन राशि देते रहना चाहिए। प्रति माह (तिमाही) मंहगाई के हिसाब से पुनर्विचार किया जाना चाहिए।
7. उसे पत्नी की विभिन्न नारी सुलभ मुद्राओं को समझना चाहिए तथा उसमें सहायक होना चाहिए।
8. वैडिंग एनीवर्सरी (विवाह की वर्षगांठ) के दिन पत्नी की इच्छानुसार कुछ उसके मनपसन्द उपहार प्रस्तुत करने चाहिए।
9. उसे अपने मनोरंजन की घड़ियों में से आधा समय पत्नी के लिए बचाना चाहिए।
10. उसे पत्नी की घरेलू जिम्मेवारियों में भी हाथ बटाना चाहिए।
11. किचन के कार्य में तथा सफाई आदि कार्यो में सहयोग देना चाहिए।

यह कर्तव्य आज के सामाजिक परिपेक्ष में शहरी पतियों की ओर से सुविधापूर्वक निभाए जा सकते हैं। गांव वालों के लिए थोड़ी सी कठिनाई आ सकती है परन्तु कर्त्तव्य तो निभाना होगा गृहस्थ को सुचारू और शान्ति पूर्वक निर्वाह के लिए।

राजेन्द्र बाबू की टोपी संन्यासी के चरणों में

- श्री रविशंकर

न्यायधीश ने जेल अधिकारियों को फटकारते हुए कहा, जब मेरे आने की पूर्व सूचना थी तो बन्दी को अभी तक उपस्थित क्यों नहीं किया जा सका? समय बीतता जा रहा था। इस संभ्रांत बन्दी का मुकदमा जेल में ही सुनने के लिए उक्त अंग्रेज न्यायाधीश को जेल परिसर में ही नियुक्त किया गया था। बन्दी थे ज्योतिर्मठ के जगतगुरु शंकराचार्य। जेल अधिकारी परेशान थे। वे पूजा में समाधिस्थ बैठे शंकराचार्य जी को उठकर तो ला नहीं सकते थे? ठीक है अब मैं जाता हूँ। ध्यान रहे, ठीक 3 बजे सायंकाल बन्दी को अवश्य उपस्थित किया जाय।'' न्यायधीश क्रोध से कांपते हुए चले गये। जगतगुरु शंकराचार्य के एक भाषण से क्षुब्ध अंग्रेजी सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा दायर किया था। सांयकाल निर्धारित समय पर शंकराचार्य जी अपनी गरीमामय चाल से आ रहे थे। घड़ी की सुइयाँ आगे बढ़ती जा रही थी प्रत्येक क्षण न्यायाधीश का क्रोधोन्मत्त बना रहा था। निरीक्षक एवं अधिकारी भी सहमे हुए थे। कि न जाने यह क्रुद्ध न्यायाधीश शंकराचार्य जी का क्या अपमान कर बैठे कैसी कठोर सजा उन्हें दे बैठे। शंकराचार्य समस्त हिन्दुओं के पूज्य थे अत: चिन्ता स्वाभाविक थी। राजेन्द्र बाबू विशेष रूप से इस अवसर पर उपस्थित थे वे परेशान थे कि ''मेरे सम्मुख यह कैसा धर्म-संकट आया है। मेरे ही सम्मुख हिन्दुओं के परमपूज्य जगत्गुरु शंकराचार्य का अपमान हो गया तो कितनी ग्लानी की बात होगी।'' एक क्षण उन्होंने कुछ सोचा और जैसे ही शंकराचार्य जी ने न्यायाधीश के कक्ष में प्रथम पग रखा कि राजेन्द्र बाबू ने अपनी टोपी उतार कर शंकराचार्य जी के चरणों में रख दी और साष्टांग प्रणाम की मुद्रा में उनके चरण पकड़ करलेट गये। इस आकस्मिक घटना से सभी स्तब्ध रह गये। देश के महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता के रूप में ख्याति प्राप्त राजेन्द्र बाबू को इस प्रकार जगदगुरु के चरणों में गिरते देख वातावरण बदल गया। सभी उपस्थित लोगों ने आदरपूर्वक झुक कर जगद्गुरु का अभिवादन किया। न्यायाधीश भी इस भारतीय संन्यासी के प्रति जानमानस की ऐसी श्रद्धा देखकर अभिभूत हो उठा और उसका सारा क्रोध समाप्त हो गया राजेन्द्र बाबू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जगद्गुरु का मेरे सम्मुख कहीं अपमान न हो जाए इसलिए उसी क्षण एकाएक मुझे यह उपाय सूझा और अपनी तथा हिन्दू समाज की समस्त श्रद्धा समेट कर मैं सार्वजनिक रूप से उनके चरणों में लिपट गया। राजेन्द्र बाबू की यह सूझ-बूझ एकाकी नहीं थी। उनके रोम-रोम में भारतीय संस्कृति की मर्यादायें मुखरित थी।

असली सुख

चींटी हर समय काम करती रहती थी। कभी बिल की व्यवस्था करती, तो कभी राशन-पानी की। उसे काम करते अकर्मण्य कछुआ देखता रहता था। एक दिन चींटी अपने परिवार के लिए खाना लेने बाहर गई हुई थी। लौटकर आई, तो देखा कि कछुआ उसके बिल के ऊपर पत्थर बना बैठा हुआ है। चींटी ने उसके खोल पर दस्तक दी, तो उसने मुंह निकाला। चिढ़कर बोला-क्या है? चींटी बोली-यहां मेरा घर है, यहां से हट जाओ। कछुए ने कहा-देखती नहीं, मैं आराम कर रहा हूं। मुझे यहां से कोई नहीं हटा सकता। जाओ, मेरी तरह जाकर आराम करो। चींटी ने कहा-क्या तुम्हें अपने आलस में सुख मिलता है? कछुए ने कहा-मैं क्या, जो भी मेरी तरह अपने हाथ-पांव सभी कामों से खींचकर अपने में लीन हो जाता है, वही सुखी है। यह कहकर कछुआ फिर अपने खोल के भीतर समा गया। चींटी तो मेहनती थी। उसने कछुए के पास से बिल बनाया और जमीन के भीतर-भीतर अपने बिल में चली गई। चींटियां संगठित होकर कछुए के नीचे पहुंच गईं और उसे बेतरह काटने लगीं। आखिरकार चींटियों के प्रहार से बचने के लिए कछुए को आलस त्याग कर वहां से हटना ही पड़ा। चींटी आकर बोली-अब बताओ, तुम्हें सुख किसमें मिला? चींटियों से कटते रहने में या अपने हाथ-पांव हिलाकर वहां से हटने में?

कथा-मर्म: संकट आने पर हम काम करें, इससे अच्छा है कि काम करने की आदत डाल लें, जिसमें असली सुख है।

मधुमेह (डायबिटीज)

– प्रस्तुति कर्म आर्य

मधुमेह एक भयभीत कर देने वाला रोग है। विश्व के अधिकांश लोग आज इस रोग के शिकार हैं। भारत में मधमेह के रोगियों की संख्या करोड़ों में होगी। व्यस्क ही नहीं कई मासूम बच्चे भी इस रोग के शिकार हो चुके हैं। एक समय था जब इस रोग को पैसे वालों का रोग समझता जाता था, लेकिन आज के परिवेश में इस रोग ने अपनी सीमाएं तोड़ दी हैं और यह गरीब गुरबा लोगों को भी अपना शिकार बना रहा है। शुरु-शुरु में अधेड़ावस्था पार कर चुके स्त्री-पुरुष ही इस रोग के शिकार होते थे, लेकिन आजकल किसी भी आयु-वय के व्यक्ति पर इस रोग का आक्रमण हो जाता है।

उत्पत्ति का कारण

मधुमेह को लेकर किए गए शोधों के अनुसार शरीर में शर्करा की मात्रा बढ़ जाने से इस रोग का तेजी से विकास होता है और शर्करा की मात्रा बढ़ने का एकमात्र कारण है अत्यधिक मिष्ठानों का सेवन। हम जो भी भोजन करते हैं, उसमें थोड़ी बहुत शर्करा की मात्रा होती है। शरीर में पैन्क्रियाज नामक ग्रंथि ऐसे स्राव उत्पन्न करती है जो भोजन की शर्करा को ग्लूकोज में बदल देती है। किन्तु जब कोई व्यक्ति आवश्यकता से अधिक चीनी, गुड़, शक्कर एवं मिठाइयों का सेवन करता है तो शरीर में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है, इस शर्करा को पचाने के लिए पैन्क्रियाज ग्रंथि उतना अधिक स्राव (इंसुलिन) उत्पन्न नहीं कर पाती, इस कारण शरीर में आवश्यकता से अधिक पहुंच चुकी शर्करा ग्लूकोज में नहीं बदल पाती और सीधी जाकर रक्त में मिल जाती है। इस प्रकार रक्त में शर्करा बढ़ती चली जाती है, यही अतिरिक्त शर्करा मूत्र में मिलकर निष्कासित होती है, इससे शरीर तेजी से शक्तिहीन होने लगता है। इस प्रकार एक अच्छा भला व्यक्ति लापरवाही एवं खान-पान पर नियंत्रण न रख पाने के कारण मधुमेह का शिकर हो जाता है।

लक्षण- इसका सबसे बड़ा लक्षण है कि व्यक्ति को पेशाब के मार्ग से शर्करा का जाना। लेकिन आमतौर पर रोगी को लम्बे समय तक विकृति का बोध नहीं हो पाता। हाँ, उसे शारीरिक कमजोरी अवश्य महसूस होती है। रोगी काफी समय तक यही नहीं समझ पाता कि आखिर उसका शरीर तेजी से निर्बल क्यों होता जा रहा है। बाद में चिकित्सक की सलाह पर जब वह अपने रक्त-मूत्र का परीक्षण कराता है तब ज्ञात होता है कि वह तो मधुमेह रोग का शिकार हो चुका है।

मधुमेह रोगी को प्यास बहुत लगती है। वह बार-बार पानी पीता है लेकिन प्यास नहीं बुझती। उसके शरीर में जहा-तहां चीटियों के काटन जैसी चुभन होती है। शरीर में जहां-जहां खुजली की शिकायत होती है, विशेषतया गुप्तांगों पर। चूंकि पानी अधिक पीता है, इसलिए पेशाब की हाजत भी बार-बार होती है। शारीरिक निर्बलता का प्रभाव व्यक्ति की दृष्टि पर भी पड़ता है और उसमें दृष्टिदोष उत्पन्न हो जाता है। नजर कमजोर हो जाती है। पुरुषों में मर्दाना ताकत तेजी से क्षीण होने लगती है, यहां तक कि कुछ रोगी तो नपुंसकता की कगारपर भी पहुंच जाते हैं।

चिकित्सा- यहां यह स्पष्ट कर देना हर दृष्टि से मुनासिब होगा कि मधुमेह रोग को किसी भी औषधि से जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता। इस रोग में जो भी औषधीय उपचार हैं उनका उद्देश्य शरीर में शर्करा को नियंत्रित करना है। स्वस्थ स्त्री-पुरुष

SMILE

DENTAL
CLINIC
Dr. Ravinder Malik
Dr. Neelam
झज्जर मोड़ के सामने, मेन रोहतक रोड़,
नजदीक संगम लैब, बहादुरगढ़, हरियाणा
(M) 9813065244

यानि ईश्वर की कृपा से जो लोग इस रोग के शिकार नहीं हुए हैं, वे अत्यधिक मीठे से परहेज करें।

- मेथी के 5 ग्राम दाने रात को पानी में भिगोकर रखें और प्रातः उठकर उन दानों को उसी पानी में मसलकर पी लें अथवा 5 ग्राम मेथीदाने का चूर्ण जल के साथ सेवन करें इससे मधुमेह में बहुत लाभ होता है।
- बसंतकुसमाकर रस 125 मि.ग्रा. शहद में मिलाकर सुबह-शाम एक माह तक सेवन करें। मधुमेह की यह बहुत ही गुणकारी एवं लाभदायक औषधि है। इससे काफी समय तक शरीर में शर्करा पर नियंत्रण बना रहा है और शारीरिक कमजोरी में भी आराम मिलता है अर्थात् कमजोरी दूर होती हे।
- बसंतकुसमाकर रस की 1 गोली जामुन की गुठली के चूर्ण और शिलाजीत के साथ सेवन करने से भी मधुमेह रोग में लाभ होता है। इस योग के सेवन से शारीरिक कमजोरी, मधुमेह से उत्पन्न नपुंसकता तो दूर होती है है, बहुमूत्र की विकृति का प्रकोप भी शांत होता है।
- बहुमूत्रांत्क रस की 1-1 गोली सुबह-शाम 1-1 ग्राम जामुन की गुठली एवं गुड़मार बूटी के चूर्ण में गूलर का रस और शहद मिलाकर लेने से शकरा पर नियंत्रण होता है।
- जामुन, करेला, नीम आदि कड़वे फलों से मध ुमेह में आशातीत लाभ होता है। जामुन फल तो सीजन में खाना ही चाहिए, इसकी गुठलियों को छाया में सुखाकर और पीस-कूटकर इनका चूर्ण बनाकर सेवन करने से भी मधुमेह रोग में बहुत लाभ होता है।
- प्रतिदिन 150 से 200 ग्राम की मात्रा में टमाटर खाने से मधुमेह रोगी को बहुत लाभ होता है। टमाटर का हल्का खट्टापन शरीर में शर्करा की मात्रा को कम करता है।
- शुद्ध शिलाजीत 3 रत्ती की मात्रा में शहद में मिलाकर प्रतिदिन प्रातः सायं सेवन करने से शर्करा पर नियंत्रण रहता है।
- नीम के पत्ते 100 ग्राम, गिलोय 50 ग्राम, अजवायन 25 ग्राम, सौंफ 25 ग्राम और चिरायता 15 ग्राम। इन सभी को धूप में 2-3 दिन अच्छी तरह सुखा लें। तत्पश्चात कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। सुबह खाली पेट 1 चम्मच चूर्ण ठंडे पानी के साथ लेने से रकत शर्करा नियंत्रण में रहती है।
- खीरा, करेला और टमाटर 1-1 की संख्या में लेकर इनका रस निकालें और सुबह खाली पेट लें, इससे मधुमेह रोग नियंत्रित होता है।
- 6-7 पत्ते नीम के सुबह खाली पेट चबाकर खाएं। नीम के पत्त चूंकि कड़वे होते हैं इसलिए हर कोई इस नुस्खे को नहीं कर सकता। अतः नीम के पत्तों को पीसकर पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।
- सदाबहार के फूल आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, 6-7 फूल खाली पेट जल के साथ लेने से मधुमेह में लाभ होता है।
- गिलोय, जामुन, कुटकी, चिरायता, निम्ब पत्र, कालमेघ, काला, जीरा, सूखा करेला और मेथी, इन सबको समान
- मात्रा में लेकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण 1-1 चम्मच सुबह शाम खाली पेट पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में विशेष लाभ होता है।
- चन्द्रप्रभा वटी की एक गोली सुबह और एक गोली शाम (सोने से एक या डेढ़ घंटा पूर्व) जल के साथ लेने से मधुमेह में बहुत लाभ होता है।
- ब्राह्मी रसायन बटी की एक गोली जल के साथ

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

सेवन करें। इससे न केवल शारीरिक शक्ति विकसित होती है बल्कि शर्करा पर भी लम्बे समय तक नियंत्रण बना रहता है।

- मधुमेह होने पर रोगी को पंचकर्म चिकित्सा की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। पंचकर्म से पूरे शरीर की शुद्धि हो जाती है।
- मेषश्रृंगी के पत्तों को छाया में सुखाकर कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बना लें इस चूर्ण की 5 ग्राम की मात्रा जल के साथ सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है। चाहे तो 10-15 ग्राम चूर्ण का काढ़ा बनाकर दिल में दो बार प्रयोग कर सकते हैं।
- मधुमेह रोगी को प्रतिदिन करेले की सब्जी का सेवन करना चाहिए इससे मधुमेह में शर्करा नियंत्रित होती है।
- करेले के 10-15 मिलीलीटर रस में जल अथवा शहद मिलाकर लेने से भी शर्करा नियंत्रित होती है।
- मधुमेह में बहुमूत्र की शिकायत होने पर 5 ग्राम हल्दी जल के साथ सेवन करने से मधुमेह जनित बहुमूत्र की शिकातय में कमी आती है।
- बेल के पत्तों का रस 3 मिलीलीटर, गुड़मारबूटी के पत्तों का रस 3 मिलीलीटर औरनीम के पत्तों का रस 3 मिलीलीटर मात्रा में लेकर, सबको मिलाकर सेवन करें। इससे शरीर में शर्करा का पूरी तरह नियंत्रण रहता है।
- 62 मि.ग्रा. स्वर्णमाक्षिक भस्म, 250 मि.ग्रा. प्रबाल पिष्टी एवं 62 मि.ग्रा. नाग भस्म, इन तीनों को खरल कर लें और प्रात: व रात्रि में शहद के साथ सेवन करें, इससे शर्करा पर नियंत्रण होता है।

सावधानी एवं खान-पान

मधुमेह रोग में चूंकि शर्करा का पाचन नहीं हो पाता, इसलिए रोगी को चाहिए कि भोजन में शर्करायुक्त (मीठे), प्रोटीनयुक्त एवं कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य-पदार्थो का सेवन न करें।

अधिक मीठे फल भी रोगी के लिए वर्जित हैं। मैदा से बनी चीजों से भी रोगी को परहेज करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नया अनाज, उड़द की दाल, मसूस, कंदमूल, आलू, कचालू, अरवी, गोभी आदि का सेवन भी रोगी को नहीं करना चाहिए। जहां तक सम्भव हो रोगी को सिगरेट और शराब से भी परहेज करना चाहिए। यह दोनों व्यसन रोगी को अधिक हानि पहुंचाते हैं। यदि मधुमेह के साथ उच्चरक्तचाप की भी शिकायत हो तो रोगी को भोजन में कम से कम नमक का उपयोग करना चाहिए।

एक बार में ही रोगी बहुत अधिक मात्रा में भेजन न करे बल्कि दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा भोजन करें।

रोगी को चाहिए कि बराबर चिकित्सक के सम्पर्क में बना रहे और उसी के परामर्श से हल्का, सुपाच्य व तरल भोजन ले। भोजन में खाली चावल, करेला, लौकी, कुलथी, परवल, टिंडे, तोरई, गेहूं व जौं आदि को स्थान दें। जौं की रोटी रोगी के लिए विशेष लाभप्रद है। रोगी को चाहिए कि प्रतिदिन सैर के लिए जाए। प्रात:काल की शीतल व शुद्ध वायु से रोगी को बहुत लाभ होता है।

रोगी को शारीरिक श्रम से बचना चाहिए।

आर्यसमाजी बनो

- देवराज आर्य मित्र

मैं बात कहूंगा खरी-खरी,
चाहे किसी को अच्छी लगे या बुरी।
आज एक ही बात बताऊंगा,
'मनुर्भव' का सन्देश सुनाऊंगा।।
मानव का चोला पाकर,
दानवता के काम न कर।
अन्त समय पछतायेगा,
इस यौवन को बदनाम न कर।।
मांस, मछली, अण्डों से
मत पेट को कब्रिस्तान बना।
यदि स्वस्थ नीरोग रहना चाहे,
तो शुद्ध आहार-विहार बना।।
धूम्रपान मद्यपान से,
वातावरण मत दूषित कर।
अन्यथा साफ करेगा तू ही,
साँप और सूअर बन कर।।
कुछ ज्ञान प्राप्त करने के हित,
वैदिक सत्संग में जाया कर।
आनन्द प्राप्त करने के लिए
गुण ईश्वर के ही गाया कर।।

- डब्ल्यू जैड-428, हरि नगर, नई दिल्ली-64

कर्मफल सिद्धान्त से जुड़े कुछ प्रश्न व समाधान

- प्रस्तुति विक्रमदेव

इस सृष्टि में जितने भी चेतन प्राणी मात्र मनुष्य व मनुष्येतर, जलचर, स्थलचल व नभचर प्राणी हैं वे सब कर्मफल से बंधे हुए हैं और कर्म से ही मुक्त भी होते हैं। ''कर्म एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयों:'' यद्यपि यह कर्म व कर्मफल व्यवस्था बहुत ही विस्तृत, जटिल और बहुत ही कठिनाई से समझने योग्य है, इसको शत-प्रतिशत समझ पाना अत्यन्त कठिन है फिर भी जितना हमारे जीवन के लिए समझना आवश्यक है और अपने गुरु आचार्यो से जितना सुना है, समझा है, उतना तो विचार कर ही सकते हैं।

1. भारतीय संस्कृति का मूल तत्व क्या है?: भारतीय संस्कृति का मूल तत्व हैं 'धर्म'। डुधात्र धारणपोषणयो धातु से धर्म शब्द की निष्पत्ति होती है अर्थात् जो सबको धारण व पोषण करता है वह धर्म है। वैशेषिक दर्शन में धर्म की परिभाषा इस प्रकार की है-''यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयससिद्धि: स धर्म:'' अर्थात् जिसके माध्यम से भौतिक और अध्यात्मिक उन्नति होती है वह धर्म है।

2. धर्म का मूल क्या है?: धर्म का मूल वेद है-''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्''। वेदों में जो भी स्तुतियाँ, प्रार्थनाएँ आदि की गई हैं वो सब या तो भौतिक उन्नति के लिए हैं या फिर आध्यात्मिक उन्नति के लिए हैं।

3. वेद किसके लिए हैं?: वेद के भी केन्द्र में किसी को माने तो यह सारा प्रयास आत्मा की उन्नति के लिए, आत्मा को हानि से बचाने के लिए ही हो रहा है। आत्मा अपने कर्मो व संस्कारों से बंधा हुआ है। इसलिए सर्वप्रथम हमें कर्म के प्रति ही जागरूक होना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक क्षण हम किसी न किसी कर्म से युक्त रहते ही हैं-'' न हि कश्चित क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्''। (कर्म) कर्मफल व्यवस्था एक ऐसी ईश्वरीय न्याय व्यवस्था है, जो सदा औचित्यपूर्ण, पक्षपात रहित व न्यायपूर्ण ही होती है।

4. कर्म का कर्त्ता कौन है?: जो कर्म को करने, न करने या अन्यथा करने में सदा स्वतन्त्र होता है, उसे कर्त्ता कहते हैं। अत: कर्म का कर्त्ता सशरीर आत्मा है।

5. कर्म किसे कहते हैं?: जीव की क्रिया या चेष्टा विशेष को कर्म कहते हैं।

6. कर्म की कितनी स्थितियाँ होती हैं?: कर्म तीन स्थितियाँ होती हैं-क्रियमाण कर्म, संचित कर्म व प्रारब्ध कर्म। क्रियमाण कर्म-जो हम अभी कर रहे हैं। संचित कर्म-जो हम कर चुके हैं। प्रारब्ध कर्म-जो विपाक को प्राप्त हो चुके हैं अर्थात् फल देने के लिए उन्मुख हो चुके हैं, इसी को भाग्य भी कहते हैं।

7. कर्म कितने प्रकार के होते हैं?: कर्म की चार श्रेणियाँ हैं-पुण्य कर्म (धर्म/शुभ), पाप कर्म (अधर्म/अशुभ), मिश्रित कर्म (पुण्यापुण्य) व दिव्य कर्म। पुण्य कर्म-जिससे हमारा व दूसरों का हित ही होता है, जैसे-योग, यज्ञ, दान, सेवादि। पाप कर्म-जिससे अपना व अन्यों का अहित ही होता है, जैसे-झूठ, चोरी व बेईमानी आदि। मिश्रित कर्म-जिस कर्म में कुछ हित और कुछ अहित भी हो रही है, जैसे-सुविधा, संसाधन व समृद्धि मूलककर्म। दिव्य कर्म को ही निष्काम कर्म भी कह सकते हैं अर्थात् जिससे व्यष्टि और समष्टि मुक्ति की तरफ, ईश्वर की तरफ चल पड़ती है। उपरोक्त तीन प्रकार के कर्म सभी सामान्य जनों के होते हैं तथा चौथे निष्काम कर्म या दिव्य कर्म केवल योगियों के ही होते हैं।

8. कर्मो का फल क्या है?: कर्मो का फल सुख या दु:ख नहीं, अपितु जाति, आयु और भोग है। आप मनुष्य जाति में पैदा होगें या पशु, पक्षी, कीट पतंग, वृक्षादि और अमुक-अमुक जाति विशेष में आपकी औसत आयु क्या रहेगी जैसे वर्तमान समय में मनुष्य की औसत आयु लगभग 100 वर्ष मान सकते हैं और उस जाति में आपको माता-पिता, घर, जमीन, जायदाद इत्यादि कैसे और कितने मिलेंगे यह हमारा विपाकोन्मुख कर्माशय तय करता है अर्थात् ये सब हमें कर्मफल के स्वरूप मिलते हैं। जितना-जितना परहित या अहित हमने किया है उससे कई गुणा अधिक फल मिलता है और जितना-जितना हमनें भोग लिया उतना-उतना कर्माशय (भाग) वर्तमान में से कम होता जाता है।

9. कर्म का फल किसको मिलता है?: कर्म का फल सदा उसी को मिलता है, जिसने कर्म किया

है, लेकिन उसका प्रभाव या परिणाम दूसरों को भी मिलता है। फल हमेशा कर्मानुसार ही मिलता है जितना करते हैं उससे अनन्त गुणा मिलता है। तथा फल देने वाला ईश्वर सदा हमारे कर्मो को ठीक-ठीक जानता है। अत: हमारे हानि या लाभ ही कि क्षति-पूर्ति भी वह करता है।

10. हमें कर्मफल देने वाले कौन-कौन हैं?: कर्मफल देने वाले इस लोक में माता-पिता, गुरुजन, राजा, अधिकारी, न्यायाधीश और समाज होता है किन्तु ये अल्पज्ञ होने के कारण, अल्पशक्ति वाले होने के कारण इनके न्याय में न्यूनाधिकता हो सकती है। राग-द्वेष से युक्त होने के कारण जान-बूझकर या अनजाने में भी पक्षपात सम्भव है। लेकिन अन्तिम फल देने वाला तो ईश्वर ही है और वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी और निष्पक्ष होने से उसके न्याय में कभी न्यूनाधिकता नहीं होती, अपितु लोक में घटित हुई न्यूनाधिकता को भी वह भरता है, उसकी क्षति-पूर्ति भी ईश्वर करता है। अर्थात् कम मिला तो पूर्ति करता है और अधिक मिल गया तो अधिग्रहण भी करता है। किन्तु अन्तत: किसी के भी साथ अन्याय नहीं होता अथवा कम या ज्यादा दण्ड नहीं मिलता, अपितु न्याय से पूरा-पूरा फल मिलता है।

11. कृत क्या है?: जो कर्म हमने स्वयं किया है।

12. कारित क्या है?: जो किसी दूसरे को कहकर उससे करवाया है।

13. अनुमोदित कर्म क्या है?: अनुमोदित कर्म वह है जो कोई अन्य व्यक्ति कुछ कर्म कर रहा था और हमने उसका अनुमोदन कर दिया। ये पुण्य कर्म या पाप कर्म दोनों भी हो सकते हैं।

14. कर्माशय कम कैसे होता है?: सुख-सुविधा, साधन, आदि के मिलने से या लेने से उतना-उतना पुण्य का कर्माशय कम हो जाता है। यथा-भोजन, वस्त्र, जल, विद्युत, ज्ञान, सम्मान, रूप, यश, शरीर, माता-पिता, जमीन, सम्पत्ति इत्यादि। जितना हमने भोग लिया उतना ही हमारा खाता खाली हो गया, अन्याय या न्यायपूर्वक किसी के द्वारा असुविधा या बाधा देने पर उतना-उतना पाप कर्माशय भी कम हो जाता है।

15. कर्मफल क्यों दिया जाता है तथा उसका प्रयोजन क्या है?: गुरु, माता-पिता या ईश्वर हमें जो दण्ड देते हैं, उनका प्रयोजन हमें दु:ख देना नहीं होता, अपितु हमारे सुधार या उन्नति के लिए ही देते हैं। इसी प्रकार कर्मफल व्यवस्था हमारी उन्नति व सुख के लिए ही है तथा सृष्टि में न्याय व्यवस्था बनाये रखने के लिए है।

16. पुण्य का फल क्या है?: उन्नति का अवसर या साधन प्रदान करने के लिए अथवा शुभ के प्रति प्रोत्साहन या फल भोग कराने के लिए पुण्य का फल होता है।

17. पाप का फल क्या है?: अशुभ के प्रति हतोत्साह, सुधार या फल भोग कराने हेतु पाप का फल मिलता है। किन्तु बिना भोगे फल की समाप्ति कदापि नहीं होती मुक्ति अवस्था को छोड़कर।

18. कर्म कितने प्रकार के हैं?: जितने भी कर्म हम करते हैं मुख्य रूप से उन्हें दो भागों में बाँट सकते हैं-सकाम कर्म एवं निष्काम कर्म।

19. सकाम कर्म कौन से हैं?: भौतिक सुख-सुविधा व सम्मान के लिए जो काम किये जाते हैं, वे सकाम कर्म कहे जाते हैं। वे पाप या पुण्य दोनों हो सकते हैं।

20. निष्काम कर्म क्या हैं?: यदि हमारे कर्म का लक्ष्य भगवान् को पाना है या मुक्ति को पाना है तो वह निष्काम कर्म से ही सम्भव है। भले ही ऊपर से देखने में वह सांसारिक काम या गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए किये जाने वाला शुभकर्म, यानि नि:स्वार्थ कर्म भी क्यों न हो। निष्काम कर्म हमेशा पुण्य कर्म ही होते हैं। यहाँ निष्काम का अर्थ दिव्य कामना से रहित कर्म, ऐसा कदापि नहीं है क्योंकि कभी भी कोई कर्म कामना के बिना तो हो ही नहीं सकता, भले ही वह भगवान् को पाने की ही कामना क्यों ना हो। हाँ, किसी ने अपने जीते जी मुक्ति को प्राप्त कर लिया और शरीर अभी बचा हुआ है तो उस जीवनमुक्त योगी के माध्यम से जो कर्म होंगे, उनको कामना रहित या निष्काम कर्म कह सकते हैं। हमें हमारी कामना के अनुसार भी फल मिलता है, लेकिन उतनी मात्रा में मिलेगा, जितनी मात्रा में वह पुण्य कर्म किये हैं। यदि कामनाएँ पूरी नहीं हो रही हैं तो समझ लेना कि मेरे पुण्य कर्म थे, इसलिए अब पुण्यों को और अधिक बढ़ाना है।

21.जीवन या साधना की सबसे बड़ी बाधा क्या है?: प्रवाह से अनादिकाल से चला आ रहा पिछला कर्माशय व संस्कार हमारा पीछा करता है। जीवन में हम बार-बार आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं और ये पिछला अशुभ कर्माशय व संस्कार हमारा पीछा नहीं छोड़ता। प्रबल शिवसंकल्प, समर्थ गुरु का मार्गदर्शन, कठोर तप, साधना व सेवा से ही इस पिछले अशुभ कर्माशय व संस्कारों को समाप्त किया जा सकता है। कब कौन-सा कर्माशय व संस्कार का विपाक (कर्म का फल) हमारे सामने आ जाए और जीवन में अंधेरा हमें घेर ले, अत: हर पल जागरूक रहें। ज्ञान, निष्ठा व निष्काम कर्म (सेवा) के आश्रय से ही हम इन विकारों से बच सकते हैं।

22. कौन से पाप या पुण्य कर्मो का फल शीघ्र मिल जाता है?: जो व्यक्ति संसार के उपकार में लगे हैं, श्रेष्ठ, आध्यात्मिक, साधक, योगिजन हैं और उनकी सेवा में जो लगे हैं, उन लोगों के पुण्य का फल अपेक्षाकृत अन्य कर्मफल की अपेक्षा शीघ्र मिलता है। इसी प्रकार किसी दुर्बल, भयभीत, बालक, वृद्ध, स्त्री, हमारे आश्रित, धर्मात्मा, योगी, श्रेष्ठ पुरुष हैं, उनके प्रति किया गया अपराध हमें शीघ्र फल देने वाला होता हैं अर्थात् हमारे उस कर्म के द्वारा समाज का बड़ा हित या अहित हो रहा है, अथवा किसी सज्जन या धार्मिक, आध्यात्मिक व्यक्ति के प्रति किया गया पुण्य या पाप अधिक फलदायी होता है। महाभारत में एक वर्णन आता है कि जिस प्रकार हजारों गायों की भीड़ के बीच में भी बछड़ा अपनी ही माँ के पास जाता है, उसी प्रकार हमारा कर्म हमारा पीछा करता हुआ हमारे ही पास आता है। एक दिन में जीवन यापन करने के लिए जो भोजन, वस्त्र, वायु, जल, मकान, बिजली, माता-पिता, गुरुजनों की सेवा हम लेते हैं, इस सारे क्रम में लाखों-करोड़ों आत्माएँ हमारा सहयोग ईश्वरीय विधान से कर रही हैं और साथ ही इन्तजार भी कर रही हैं कि कब हमें मौका मिले और हमारा उद्वार हो। अत: अब यदि हम जागरूक नहीं हुए तो उनकी जगह हमें कई गुणा ज्यादा सेवा देनी पड़ेगी और हमारी जगह यह सुनहरा अवसर उनको दे दिया जायेगा और यदि हम प्रतिपल अपने स्थूल व मानस कर्म के प्रति सजग रहते हुए इसका सदुपयोग करें तो इन सब दु:खों, कष्टों व क्लेशों से अत्यन्त मुक्ति पाकर उस परम सुख को पा सकते हैं। ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री

- **बेटा**-पापा पार्टी के लिए अपने दोस्त के घर जा सकता हूं।
  पिताजी-मुझसे मत पूछो अपनी माँ से पूछो।
  माँ-मुझसे मत पूछो अपने पापा से पूछो।
  बेटा-ये साला घर है या भारतीय स्टेट बैंक की ब्रांच?
- **ग्राहक**-आपकी भैंस एक आँख से खराब है और फिर भी इसके 25000 मांग रहे हैं।
  पप्पू-आपकी भैंस दूध के लिए चाहिए या नैनो में टक्कर करने के लिए।
- लड़का अपनी माँ के साथ बस में कही जा रहा था।
  कंडक्टर-टिक ले लो।
  लड़का-आधी मेरी और एक मेरी माँ की डेढ टिक दे दो।
  कंडक्टर-तेरी मूँछ आ गई अभी भी आधी टिकट पूरी ले।
  लड़का-अच्छा तो मेरी पूरी दे दे मेरी मां की आधी, उसके मूंछ नहीं आ रही।
- **जज**-तू तीसरी बार अदालत आया है, तुझे शर्म नहीं आती।
  पप्पू-अच्छा तू तो रोज आता है तूझे तो डूब कर मर जाना चाहिए।
- एक बार पंजाबी कुएं में गिर गया। एक हरियाणी वहां से गुजरा आवाज आअने पर उसने पूछा-कौन है भाई?
  पंजाबी-अस्सी हां
  हरियाणीवी-भाई एक दो होता तो निकाल देते अस्सियाँ नै कौन काढेगा पड़ा रै भीतर''

मूर्तिपूजा और आर्यसमाज-एक चिन्तन

आप सब मूर्तिपूजा से तो भली-भांति परिचित ही है। हमारे देश में अनेक प्रकार से सम्बोधित किए जाने वाले देवी-देवताओं के मन्दिर बना कर, उनमें उनकी मूर्तियां स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है। आर्यसमाज इस प्रकार की पूजा का विरोध करता है। क्योंकि आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जहाँ हमें सत्य की महत्ता बताई जाती है। सत्य के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराया जाता है। आर्यसमाज किसी भी व्यक्ति की निजी बपौती नहीं वह तो प्रत्येक उस मनुष्य के लिए है जो बिना किसी स्वार्थ के,जाति भेद भुलाकर अर्थात् बिना किसी भेदभाव के परोपकार कार्य अर्थात् पुरुषार्थ करता है। यह एक सार्वभौमिक सिद्धान्तों वाली संस्था है। जो सम्पूर्ण संसार में रहने वाले प्रत्येक मानव के लिए हितकारी है। चाहे वह किसी भी मत या सम्प्रदाय से संबंन्ध रखने वाला क्यों न हो। आर्यसमाज दिखावे में विश्वास नहीं करता कहने का तात्पर्य है आर्यसमाज में भी मूर्तिपूजा करनी बताई जाती है, पंचायतन पूजा करनी बताई जाती है लेकिन किन मूर्तियों की इस पर विचार करना है। मैंने तो जबसे आर्यसमाज के नियमों व उद्देश्यों को जाना है तब से यही जाना है कि वास्तविक और सही, मूर्तिमान माता-पिता आदि की पूजा केवल और केवल आर्यसमाज में ही करनी बताई जाती है। ऐसी मूर्तिपूजा की सार्थकता व उद्देश्य समझाया जाता है। यह जो सच्ची 'पंचायतन' वेदोक्त और वेदानुकूल देव पूजा और मूर्ति पूजा है सुनो-

'प्रथम माता 'मूर्तिमान पूजनीय देवता', अर्थात् संतानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता सत्कर्त्तव्य देव, उसकी भी माता के समान सेवा करनी। तीसरा आचार्य जो विद्या दान देने वाला है, उसकी तन, मन, धन से सेवा करनी। चौथा अतिथि जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला, जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करें। पांचवा-स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। ये पांच मूर्तिवान देव जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्य शिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव वेद विरोधी हैं।'-सत्यार्थ प्रकाश समु.11, पृ. 275-76।

जैसे किसी महान व्यक्ति की मूर्ति को देखने से हमारा ध्यान उसके जीवन चरित्र पर जाता है और उसके सात्विक जीवन से प्रेरणा मिलती है यानि मूर्ति उस महान् पुरुष के जीवन के भीतर झांकने का माध्यम बनती है और वह हमारे जीवन को उत्तम बनाने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए उस महान् पुरुष का चित्र घर में, दुकान में व कार्यालय में रखना आर्यसमाज सेवी ने कोई धार्मिक या शैक्षणिक संस्था या सामाजिक स्थान बनाया हो जिसमें उसका तन, मन, धन लगा हो तो उसमें उस समाज सेवी की मिट्टी या पत्थर की मूर्ति लगाने का भी विरोधी नहीं पर उस महान पुरुषोंके चित्र जिनके मात्र से हमारे मन में समाज, राष्ट्र व मानवता के प्रति उमड़ता हो और अपने जीवन को सुधारने की प्रेरणा मिलती हो ऐसे आदर्श व्यक्ति का चित्र रखना घर की शोभा बढ़ाना है। महर्षि दयानन्द ने स्वयं कहा है कि गर्भवती स्त्री के कमरे में महान व आदर्श पुरुषों के चित्र अवश्य लगे होने चाहिए जिनके देखने से उसके भाव व विचार अच्छे बनें, मन प्रसन्न रहे और उसका प्रभाव बच्चे पर भी अच्छा पड़े और बच्च भी उन महान् पुरुषों की भांति महान बने। हम गंदे चित्र न लगाकर ऐसे चरित्रवान विद्वान त्यागी, तपस्वी, परोपकारी व जिनका जीवन समाज, राष्ट्र व मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा है। ऐसी महान आत्माओं के चित्रों को अपने घरों में लगाकर रखें। हम देखेंगे तो हममे अपने गृहस्थ, समाज, राष्ट्र ही नहीं बल्कि मानव मात्र के प्रति प्रेम भाव व सेवा की भावना जागृत होगी। अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति स्वाभिमान राष्ट्र की रक्षा व सेवा का भाव जगेगा। अन्यायी व पापियों का दमन करने का प्रोत्साहन मिलेगा, वैदिक पथ पर चलने की शिक्षा मिलेगी। ईमानदारी, करूणा, दया, सहृदयता, उदारता आदि मनुष्योचित भाव जागेंगे। इसलिए ऐसे चित्र जरूर लगाने चाहिए। जैसे यदि हम

श्री राम का चित्र लगाते है। तो हम अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए मर्यादा में रहने का ध्यान रखेंगे। यदि श्री कृष्ण का चित्र लगाते हैं तो हममें पूर्ण धैर्य व पराक्रम के साथ अन्यायी व पापियों को दमन करने का उत्साह जागेगा। यदि हम आदि शंकराचार्य का चित्र लगाते हैं तो हमारे भीतर अपने धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध होने के भाव जागेंगे। यदि बुद्ध व महावीर के चित्र लगायेंगे तो हमें सत्य, अहिंसा और वैराग्य की प्रेरणा मिलेंगी। यदि हम वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप व गुरु गोविंद सिंह के चित्र लगाते हैं तो हमें अपने स्वाभिमान को रखते हुए अन्यायी विधर्मियों से लड़ने की प्रेरणा मिलेगी। जब हम सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खाँन, वीर सावरकर का चित्र देखते हैं तो हमें ब्रह्मचर्य, संयम, त्याग, तपस्या के बल पर अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए घोर संकटों को सहने की शक्ति मिलती है।

मैंने जो उपरोक्त महान पुरुषों की पत्थर की मूर्ति बनाने की बात लिखी परन्तु इस मामले में उदासीन रहे। हमने अपने महान पुरुषों के नाम से सड़क मार्ग, पार्क, औषधालय, स्कूल आदि तो बनायें परन्तु मिट्टी, पत्थर या धातु की मूर्ति नहीं लगाई जिससे हमारे महान पुरुषों को जन-साधारण कम जानता है और आर्यसमाज का नाम भी कम हो पाया। कारण, स्टेच्यू देखने से मनुष्य के दिल व दिमाग पर स्थाई स्मृति बन जाती है जैसे गाँधी, नेहरू, इंदिरा, अम्बेडकर आदि की बनी हुई है। हमारे कुछ आर्य समाजी भाई कहेंगे कि स्वामी जी ने अपनी मूर्ति या किसी प्रकार का स्मृति चिन्ह बनाने की मनाही की है। यह उनकी महानता थी पर हमें महर्षि को छोड़कर बाकी महापुरुषों की स्टेच्यू मैं भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

आर्यसमाजों में भी और आर्यो के घरों में भी जहाँ आर्य जैसे नेताओं विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि दयानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा हंसराज, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी आदि की तस्वीरें लगी मिलती हैं वही पर राम, कृष्ण, शिवाजी, महाराणा, प्रताप व अन्य ऐतिहासिक पुरुषों के चित्र भी मिलेंगे। मूर्ति जड़ है, अचेतन है उसको अपने दुःख, सुख का कोई ज्ञान नहीं। यदि कोई उस मूर्ति को ईश्वर समझकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए पाखण्ड स्वरूप उसकी धूपबत्ती या दीपक से आरती उतारना, चन्दन लगाना, भोग लगाना, इतना ही नहीं मूर्ति को सुलाना, उसको पंखा डुलना, नहलाना आदि कार्य करता है तो उसे आर्यसमाज निरर्थक व आडम्बर मानता है। आर्यसमाज चित्र की पूजा नहीं करता बल्कि चित्र के पीछे उसका प्रेरणादायक चरित्र है उसकी पूजा करता है। पूजा का तात्पर्य धूपबत्ती दिखाकर आरती उतारना नहीं, बल्कि उस महान व्यक्ति के चरित्र को अपने जीवन में धारण करना ही उस मूर्ति की पूजा है। जैसे हम लक्ष्मी और सरस्वती की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करेंगे तो हमारे पास धन और विद्या किसी हालत में नहीं आ सकती। धन के लिए हम ईमानदारी से मेहनत कार्य करेंगे तो धन का आना निश्चित है। इसी प्रकार विद्या भी हम लगन और परिश्रम के साथ सब व्यसनों से दूर रहकर प्राप्त करेंगे तो विद्या निश्चित ही आएगी। इसलिए वही रास्ता हमें अपनाना चाहिए जिससे उसकी प्राप्ति हो। किसी चीज का सदुपयोग करके उससे लाभ उठाना ही उसकी पूजा है, चाहे वो जड़ हो या चेतन। जैसे हम अपने चेतन माता-पिता की पूजा करना चाहते हैं तो हमें उनकी धूपबत्ती से आरती उतारने की आवश्यकता नहीं। उनकी आज्ञाका पालन करते हुए उनकी सेवा व सुश्रूषा करना ही माता-पिता की पूजा है और जड़ स्वरूप पुस्तक की पूजा उसको मन लगाकर पढ़ना है। इस प्रकार सब कार्यो में यही बात लागू होती हैं। चेतन स्वरूप ईश्वर की पूजा करना भी हमारे नित्यप्रति के कार्यों का एक हिस्सा है जिसे हम दोनों समय घर में दीया-बाती जलाकर या मन्दिर में जाकर काल्पनिक देवी-देवताओं को भोग लगाकर धूपबत्ती और दीपक आदि से उनकी आरती उतारकर पूजा हो गई ऐसा मान लेते हैं जबकि हमारे ऋषियों ने ईश्वर उपासना का माध्यम अष्टांग योग बताया जिसमें हम यम, नियमों का पालन करते हुए यानि अपने आपको भीतर व बाहर से शुद्ध रखते हुए उसको बाकी अंग-आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि अवस्था में पहुँचकर ईश्वर के सानिध्य में बैठकर उसके परम आन्नद की अनुभूति

करते हैं यही ईश्वर की सच्ची, उपासना या पूजा है, इसके कारण मनुष्य में मनुष्योचित एवं देवताओं के गुणों का आविर्भाव सदा बना रहता है। इसके अलावा उन्नति का अन्य कोई मार्ग नहीं। क्योंकि लगभग 550 वर्ष पूर्व सिक्खों के गुरु और उनका बनाया ग्रन्थ भी न था। तब उनके गुरुद्वारे और उपासना का प्रचार भी कैसे होता? अत: यह प्रश्न होता है कि गुरुओं के पूर्वज ईश्वर की भक्ति किस प्रकार करते थे? इसी प्रकार 1800 वर्ष पूर्व हजरत मुहम्मद साहिब भी न थे तो नमाज रोजा आदि भी न थे। पुन: मुस्लिम पैगम्बर के पितामह आदि किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे तथा 2000 वर्ष पूर्व ईसामसीह भी न थे तथा ईसाई भी न थे और न गिरजाघर ही थे तब ईसाइयों का भक्ति करने का प्रकार भी कैसे होता? लगभग 3000 वर्ष पूर्व जैनियों के तीर्थकर भी न थे तो उनके मन्दिर और मूर्ति भी कैसे बनते? उस समय तीर्थकरों के पूर्वज ईश्वर की पूजा कहाँ और कैसे करते थे? तथा 5000 वर्ष पूर्व कृष्ण जी भी न थे, तो उनकी मूर्ति और कृष्ण मन्दिर भी कैसे बनते अत: प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण जी के पूर्वज ईश्वर की उपासना किस प्रकार करते थे? जब राम न थे तो उनके पूर्वज तथा महादेव जी के पूर्वज किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे? क्योंकि राम एवं महादेव के मन्दिर तथा मूर्ति तो उनके पश्चात् ही बनते सम्भव हुए हैं इत्यादि-सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि जब ये मत और मतों के संचालक न थे तब एक ही निराकार ईश्वर की उपासना होती थी। जैसे कि आज भी वैदिकधर्मी करते हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम एवं सर्व प्राचीन प्रकार वैदिक धर्म में ही है। जो मनुष्य ईश्वर की उपासना करना चाहे वह उपरोक्त यम और नियमों का पालन अवश्य करे। जैसे विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिए अपने पाठ्यक्रम (कोर्स) की पुस्तकें याद करके ही उत्तीर्ण होते हैं वैसे ही उपासक भी यम-नियम आदि योग के 8 अंगो का पालन करके ही ईश्वर के जानने योग्य होते हैं और ईश्वर उनको ही स्वीकार भी करते हैं। क्योंकि ईश्वर शुद्ध तथा न्यायकारी है। अत: अशुद्ध एवं अन्यायकारी से उसका मेल कहाँ? लोकाचार में भी जिनके गुण-कर्म-स्वभाव मिलते हैं उनकी ही मित्रता होती है। अत: ईश्वर भक्त होने के लिए ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश ही अपने गुण, कर्म, स्वभाव बनाता हुआ शुद्ध एकान्त देश (स्थान) में जाकर आसन लगा इन्द्रियों को विषयों से रोककर अर्थात् उपासना के समय 5 कर्मेन्द्रियों तथा 5 ज्ञानेन्द्रियों को अपने वश में करके तात्कालिक उठने वाले विचारों को न लाए तथा पूर्व अनुभव किए हुए विषयों का चिन्तन भी न करे और निद्रा भी न आ जाये इस प्रकार सावधान होकर जैसे भूखे प्राणी को भोजन के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे ही परमेश्वर से मिलने की इच्छा होनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझाने, पंच-महायज्ञों, सोलह संस्कारों, चारो वर्णाश्रमों, गुरुकुल पद्धति की शिक्षा, गोमाता की रक्षा के महत्व को समझाने, हिन्दू समाज में फैले अज्ञान, अंध विश्वास, पाखण्ड को मिटाने व इसमें पनप रही कुप्रथाओं एवं कुरीतियों जैसे नारी व शूद्रों को समान अधिकार न देना, विधवाओं का पुनर्विवाह न करना, जाति को कर्म से न मानकर जन्म से मानना आदि के विरोध में आवाज उठाने तथा राष्ट्र व मानवता के प्रति अपना कर्तव्य पालन करवाने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की है। यह सब काम वेद प्रचार से ही संभव था, इसलिए महर्षि जी ने अपने जीवन भर वेद प्रचार ही किया और आर्यसमाज भी कर रहा है। इन्हीं कामों में हिन्दुओं का हित भी निहित है। इसलिए मेरी सभी पौराणिक भाईयों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे आर्यसमाज को अपना परिमार्जन करने वाला समझें, इसे हिन्दू धर्म का रक्षक, हितैषी व पहरेदार समझें और दोनों सनातनी व आर्यसमाजी परस्पर व्यवसायिक स्वार्थ छोड़कर कन्धे से कन्धा मिलाकर देश पर मंडराए खतरों का सामना करें ताकि देश का भविष्य उज्जवल हो सके। बहुत पिट चुके, बहुत लुट चुके, बहुत खो चुकेअब भी न संभले तो कुछ भी हाथ न लगेगा।

- चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मोहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-61, मो. 9871644195

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **-विक्रमदेव शास्त्री**

बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

- डॉ. दर्शन लाल आजाद, पानीपत

यूं तो इस दुनिया में पैदा कई इन्सान होते हैं,
याद उनकी मनाई जाती है जो महान होते हैं।
जिनके सीनों में देश व कौम के गम पलते हैं,
लाचार, मजबूर को देख जिनके लहू उबलते हैं।

दूसरों को दु:खी देख जिनके आंसू निकलते है,
प्रकाश फैलाने को जो दिये की तरह जलते हैं।
ऐसे इन्सान ही महापुरुष कहलाने के हकदार हैं,
वही राहबर है वही गुरु पैगम्बर वही अवतार हैं।

ऐसे महापुरुषों में स्वामी श्रद्धानन्द एक था,
त्यागी, तपस्वी, ज्ञानी महात्मा वो नेक था

दयानन्द की राह को अपनाया स्वामी श्रद्धानन्द ने,
आर्य समाज के इस मिशन को बढ़ाया श्रद्धानन्द ने।
ऋषियों की प्रणाली गुरुकुल चलाया श्रद्धानन्द ने,
जो भी कहा वो करके ही दिखाया श्रद्धानन्द ने।

दयानन्द के गुलशन का सुगन्धित फूल था वो,
कर्मयोगी, तपस्वी एक सन्त बा असूल था वो।
ऐसे इन्सान तो दुनिया में बहुत कम होते हैं,
दूसरों के दु:ख व दर्द ही जिनके गम होते हैं।

देश जाति की इज्जत के लिए वह जीता रहा,
घृणा से चाक सीनों को प्रेम से ही सीता रहा।
बलिदान से जाति के सम्मान को बढ़ाया उसने,
जाति के हित में दांव पर जान को लगाया उसने।

अपने कार्यों से देश को था गौरव दिलाया उसने,
मोहन दास को महात्मा गांधी था बनाया उसने।
जामा मस्जिद पर प्रथम बार वेद मन्त्र गया उसने,
बिछड़ों को गले लगा शुद्धि आंदोलन चलाया उसने।

दयानन्द ने तराशा श्रद्धानन्द नगीना हो गया।
रोशनी मिली, आंख वाला ही नाबीना हो गया।
मौत के सामने भी छाती तान कर था खड़ा,
स्वतन्त्रता की लड़ाई भी वह शान से था लड़ा।
देश व जाति के लिए वह हर मोर्चे पर अड़ा,
अंग्रेज हैरान हो गए जब उससे वास्ता पड़ा।

हंसते-हंसते शहीद ने पिया शहादत का जाम,
उसे शहीद शिरोमणि को, है शत्-शत् प्रणाम।

दयानन्द की दया से हर तरफ आनन्द हो गया,
नास्तिक आस्तिक हुआ जिसका सम्बन्ध हो गया।
गन्दी नाली का कंकर, हीरा अमी चन्द हो गया,
राह से भटका था मुंशी राम श्रद्धानन्द हो गया।

घृणा का पात्र था जो सबकी पसन्द हो गया,
दुर्गन्ध कहते थे जिसे सब, वो सुगन्ध हो गया
धर्म के मार्ग पर चला, पाप सब बन्द हो गया
ज्ञान चक्षू खुले और सच्चा अक्लमंद हो गया

सच्ची दौलत पाई वो सच्चा दौलत मन्द हो गया,
शराब छूटी उसकी उसे नशा सचिन्दानन्द हो गया।
आजाद झुका जो भी सर, वो सर बुलन्द हो गया,
दयानन्द की राह अपना जीवन ही आनन्द हो गया।

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्री आर.एस. सचदेवा जी विकासपुरी, दिल्ली	1600/-
श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डॉ. पुष्पलता जी वर्मा, विकासपुरी नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीन मेहन्दीरत्ता जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री सौरभ जी विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फर्रूखनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्रीमती शीना पत्नी श्री जितेन्द्र जी छिल्लर लाईनपार, बहा.	30000/-
श्रीमती कृष्णा देवी जी दांगी सूरत, गुजरात	12000/-
अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद विद्यापीठ पंजाबी बाग, नई दिल्ली	11000/-
श्री नफेसिंह राठी जी पूर्व एम.एल.ए., बहादुरगढ़	11000/-
श्री सतीश जी खन्ना रोशन आरा दिल्ली	11000/-
श्री बिहारीलाल जो राजेन्द्र प्रसाद अनाजमण्डी बहादुरगढ़	5250/-
चौ. सूरत सिंह जी जून नूना माजरा	5100/-
श्रीमती धनपति देवी जी स्मृति मध्य	
श्री रामसिंह, बिजेन्द्र सिंह, बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती सुशीला पत्नी श्री शत्रुघ्न लाल जी, रांची, झारखण्ड	5100/-
श्री श्रीशिवनिवास गुप्ता जी, बहादुरगढ़	5100/-
श्री राजेन्द्र शर्मा चेयरमैन ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल, बहा.	5100/-
आर्य समाज सी ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली	5100/-
ग्राम पंचायत निलौठी, झज्जर	5100/-
एरोल फोरमुलेशन प्रा. लिमिटेड आसोदा बहादुरगढ़	5000/-
कुमारी सुदर्शना खन्ना रोशन आरा रोड, दिल्ली	3600/-
श्री रामधन शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री नवीन जी वाही बहादुरगढ़	2100/-
श्री ओमप्रकाश जी सैक्टर-6, द्वारका दिल्ली	2100/-
स्व. कैलाशवन्ती आर्या जी स्मृति मध्य रानी बाग, दि.	2100/-
श्रीमती रामदुलारी जी बंसल, वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	2000/-
श्री राजेश राठी जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1800/-
लीखा कैमिकल्स प्रा. लि., एम.आई.ई. बहादुरगढ़	1500/-
माता लक्ष्मीदेवी कटारिया धर्मार्थ ट्रस्ट (पं.) विकासपुरी, दि.	1500/-
श्री अशोक जी छिकारा सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1200/-
श्रीमती सोना आर्या बहादुरगढ़	1100/-
श्री यशवंत सिंह जी जेई, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री प्रभुदयाल जी ठुकराल मनोहर नगर दिल्ली	1100/-
श्री सुभाष जी ठुकराल मनोहर नगर, दिल्ली	1100/-
श्री अजय फ्रेब्रीकेटस, एम.आई.ई., बहादुरगढ़	1100/-
श्री जगदीश जी एवं समस्त परिवार बहादुरगढ़	1100/-
श्री अरूण कुमार, सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
श्री जीतराम जी आर्य, निजामपुर, दिल्ली	1100/-
श्री विरेन्द्र सिंह जी ग्राम दौलताबाद गुड़गावं हरियाणा	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रवि कुमार जी अन्जनि प्रापर्टीज बहादुरगढ़	1100/-
श्री रामवीर जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1050/-
श्री तिलकराज गुलाटी जी सतकालोनी, बहादुरगढ़	1000/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र शर्मा बराही रोड़ बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती वेदवती पत्नी श्री नरेश कु. सैनी नई बस्ती नांगलोई दि.	1000/-
श्री भीमसिंह जी डागर निलौठी, झज्जर	505/-
श्री संयज जी नोनी बायोटेक, रोहिणी दिल्ली	501/-
श्री रामरतन जी अग्रवाल, सैक्टर-बहादुरगढ़	501/-
श्री बृजलाल जी सहगल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	501/-
श्री पुष्पेन्द्र जी मुण्डका दिल्ली	500/-
श्री सुरेन्द्र जी हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री वेदप्रकाश जी आर्य, उत्तम नगर दिल्ली	500/-
श्री सुरेश जी देशवाल, रोहिणी दिल्ली	500/-
श्री शीलचन्द्र जी बहादुरगढ़	500/-
श्री बिजेन्द्र नम्बरदार, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती लक्ष्मीदेवी आर्या सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
आचार्य खुशीराम जी दिल्ली	500/-
श्री वेदपाल जी आर्य महावीर पार्क, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
श्री बिजेन्द्र जी राठी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री हरी सिंह जी दहिया टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री विक्रम विजय, एम.आई.ई. बहादुरगढ़	500/-
श्री प्रेम सागर दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री धर्मवीर जी आर्य एम.आर. ट्रेडिंग कम्पनी नरेला दि.	100 किलो चीनी
फरिश्ता एण्ड चरखा कैमिकल्स पंजाबी बाग, दि.	200 रूपये सरफ
श्री नवीन जी वाही. एम.आई.ई., बहादुरगढ़	चीनी 25 किलो, घी 5 किलो, चावल 30 किलो
श्री प्रेम सागर, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	10 किलो आटा
पुरी ऑयल मिल, बहादुरगढ़	2 टीन रिफाईण्ड तेल
श्री गुमान सिंह छिकारा कॉलोनी, बहादुरगढ़	10 किलो आटा, 5 किलो चावल, 2 किलो बुरा, 1 किलो दाल

विशिष्ट भोजन

श्रीमती कांता देवी नजफगढ़, दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री विनोद प्रमोद कुमार नजफगढ़, दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री जयभगवान जी जून गुरुनामक कॉलोनी, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री समर सन्दूजा सु. श्री सतीश चन्द्र सन्दूजा अमरीका	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री पुरुषार्थ मुनि जी वैदिक वृद्धाश्रम, बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री भंवर लाल लखोटिया, प्रीतमपुरा, दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री शाश्वत आर्य दिल्ली	500/-
श्रीमती विद्यावती दुआ बहादुरगढ़	1 कट्टा छिलका, 1 कट्टा चूरा, 1 कट्टा खल
वीना रानी शर्मा उत्तम नगर, दिल्ली	500/-
श्री रामन नरूला, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश वर्मा जी ओमैक्स, बहादुरगढ़	500/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स,** 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**–41548503, **चलभाष**–9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **दिसम्बर** 2015 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री राजेश जी राठी

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री रवि कुमार जी

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री शिव कुमार जी मदान

श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी श्री शत्रुघ्न जी को सम्मानित करते हुए

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री रमेश जी राठी

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री रवीन्द्र गुप्ता जी

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए दलाल परिवार

स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री भीम सिंह डागर

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक
दिसम्बर 2015
छपी पुस्तक - पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

स्वामी धर्ममुनि जी के 80वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी चन्द्रवेश जी को सम्मानित करते हुए

श्रीनिवास गुप्ता जी को सम्मानित करते हुए

श्री नवीन वाही जी को सम्मानित करते हुए

डॉ. राजेन्द्र जी शर्मा को सम्मानित करते हुए

श्री यशपाल गांधी जी को सम्मानित करते हुए

श्री राजहंस मैत्रेय जी स्वामी जी से आशीर्वाद लेते हुए